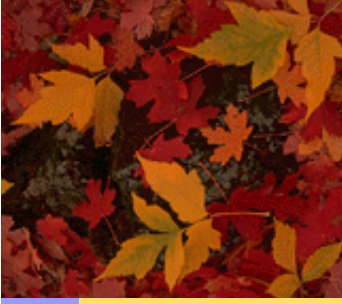


कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

Year 17, Issue 68
Oct.-Dec., 2020

वसुधा



VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

**EDITOR-PUBLISHER : Dr. Sneh Thakore - Awarded By The President Of India
Limka Book Record Holder**



सम्पादन व प्रकाशन

डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत
लिम्का बुक रिकॉर्ड होल्डर

वर्ष १७ - अंक ६८, अक्टूबर - दिसम्बर २०२०

गाँधी जी अपने-अपने हैं

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

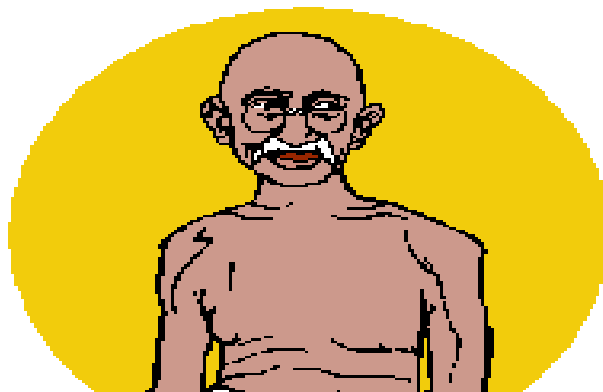
गाँधी जी अपने-अपने हैं
पर रामराज्य के सपने हैं.
तब आज़ादी के सपने थे,
अब रामराज्य के सपने हैं.

“वैष्णव-जन तो तेने कहिए,
जे पीर पराई जाने रे !
पर दुक्खे उपकार करें पर,
मन अभिमान न आने रे.”....

ये स्वर तो सबके अपने हैं,
पर भाव तुम्हारे अपने हैं.
गाँधी जी अपने-अपने हैं,
पर रामराज्य के सपने हैं.”

ले कर मैं शस्त्र-अहिंसा के,
जीते शत्रु समरसता के,
आन्दोलन सत्याग्रह के थे,
स्वदेशी सर्वोदय के थे.
गांधी-दर्शन हम सबके हैं,
पर राम सभी के अपने हैं.
गाँधी जी अपने-अपने हैं....

बापू स्वराज्य तुम ले आए,
सबका सूरज कब आयेगा?
ये प्रश्न सभी के मन में हैं -
भारत माता के सपने हैं.
गाँधी जी अपने-अपने हैं.....



वसुधा

सम्पादन व प्रकाशन : डॉ. स्नेह ठाकुर

(पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी)

(भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित)

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
भगवान श्रीराम मंदिर, अयोध्या	मदन लाल गुप्ता	३
स्निग्ध ज्योत्सना	डॉ. अरुण खेवरिया	५
हाईवे	डॉ. संदीप अवस्थी	६
अनुत्तरित प्रश्न	अविनाश तिवारी	१३
भाषाई समरूपता से अखण्डित		
राष्ट्र की परिकल्पना	डॉ. अर्पण जैन अविचल	१४
जैसे चींटियाँ लौटती हैं	केदार नाथ सिंह	१७
राम कथा में वैश्विक मूल्य	डॉ. विदुषी शर्मा	१८
कलियुग का माँग-पत्र	मणिन्दर कुमार सिंह	२२
एक मुलाकात	उषा राजे सक्सेना	२४
तस्वीर	रमेश चन्द डढवाल	२८
गाँधी जी का हिंदी प्रेम	डॉ. गुलाब चंद पटेल	२९
मिलन कैसे हो हमारा!	विजया गुप्ता	३०
तुम स्वयं दीपक बनो	प्रो. गिरीश्वर मिश्र	३१
किसने जाना	शन्नो अग्रवाल	३३
चलो, कहीं और चलें	डॉ. रमाकांत शर्मा	३४
गुड टच बैड टच	रश्मि विभा त्रिपाठी "रिशू"	३९
बेटी	त्रिपुरारी कुमार पाण्डेय	४०
मेरी लाड़ो	पूजा सिंह	४२
यादें	गीतिका सक्सेना	४३
गाँधी जी अपने-अपने हैं	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि	१अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00, भारत - रु. ६००.००

डाक द्वारा By Mail \$35.00, International Mail \$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>, kavitakosh.org/vasudhapatrika

E-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

१६३३ में तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस एक ऐसा ग्रन्थ है जिसकी उपादेयता किसी भूखण्ड या किसी कालखण्ड तक भी सीमित नहीं रह सकती. भारतीय परिप्रेक्ष्य में तो जन-जन इससे परिचित है ही, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी इसकी चर्चा बढ़ रही है. कोरोना की इस महामारी के संकेत तुलसी दास जी ने उस समय अपने उत्तरकाण्ड के १२० दोहे के बाद चौपाई १४ - “सब के निन्दा जे जड़ करहिं/ ते चमगादुर होइ अवतरहि.” और इन चमगादुरों ने पूरे विश्व में तहलका मचा रखा है. अब चौपाई १५ की पंक्ति देखिए - “काम वात कफ लोभ अपारा, क्रोध पित्त नित छाती जारा.” दोहा १२१ क. “एक व्याधि बस नर मरहिं, ए असाधि बहु व्याधि.” एक ही रोग के वश होकर लोग मर जाते हैं, यह तो असाध्य बहु व्याधि हैं. इसके बाद पहली चौपाई देखिए, “एहि विधि सकल जीव जग रोगी” तो सम्पूर्ण जग के जीव आज तुलसी की भविष्य वाणी के अनुसार चमगादड़ों के द्वारा उत्पन्न बीमारी से - कोविड १९ से त्रस्त नहीं हैं क्या?

विश्व में कोरोना द्वारा उत्पन्न इस विषम दुर्दम्य परिस्थिति में परिवार के जो सदस्य जहाँ रह रहे हैं उन्हें छोड़कर बाकी सभी लोगों का परस्पर मिलने पर प्रतिबन्ध है, उसे आज की तकनीकी ने इंटरनेट के माध्यम से कुछ तो राहत प्रदान की है. आप अपने परिवार-जनों को न केवल सुन सकते हो, देख भी सकते हो. दूसरे क्षेत्रों में भी सेमिनार का स्थान वेबिनार ने ले लिया है. मैं आभारी हूँ उन सभी के प्रति जिन्होंने अपने वेबिनारों में मुझे आमंत्रित किया, अपना अमूल्य समय दिया. साहित्यकारों ने इस समय को स्वाध्याय में, रचना-धर्मिता में, वेबिनारों द्वारा अपने विचारों को समाज के समक्ष रखने में समर्पित किया है. कालिदास ने हिमालय की ऊँचाई को साहित्य के मानदण्ड के रूप में स्थापित किया है. हिमालयी ऊँचाई को लेकर साहित्य में मूलधर्मिता है. समाज का मार्गदर्शन सकारात्मक हो, तो पंकिल से हिमालय की चोटी तक पहुँचाने का कार्य साहित्य करता है. जो सबको साथ लेकर चले ऐसा साहित्य आत्म-निर्भरता का निर्माण करता है.

कोरोना के इस कठिन काल में शरीर के परिमार्जन के साथ ही साथ सभी स्वाध्याय में भी पारंगत हों तो सोने पे सुहागा. हिन्दू धर्म, यद्यपि कि इसे न्यायालय ने भी धर्म नहीं जीवन शैली कहा है और इसी परिप्रेक्ष्य में सनातन धर्म भी, जो सनातन काल से चला आ रहा है और अनंत काल तक चलेगा, कोई विशेष धर्म नहीं है वरन् जीने की कला है. यह आपको व्यावहारिक रूप से कैसे एक अच्छे मानव रूप में जीना है, यह सिखाने की कला है.

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद, हमारी संस्कृति के ये चारों स्तम्भ हैं; उपनिषद्, पुराण आदि सभी ग्रन्थ आपको एक ऐसी जीवन-शैली अपनाने की शिक्षा देते हैं जो सार्वभौमिक हैं. मनुष्यता, मानव-धर्म, सभी से सद्-व्यवहार, सार्वकालिक, सार्वभौमिक, सर्वदेशीय है जो सनातन काल से चला आ रहा है. यह मानव-धर्म पक्षपातीय नहीं है. यह आपको अपना अस्तित्व बनाए रखते हुए एवं दूसरों के प्रति सद्भाव रखते हुए ऐसी जीवन-शैली सिखाता है जो सर्वदेशीय मानवता के आधार पर जीने की शिक्षा देता है. यह मानव को मानवता के आधार पर स्थापित सुखद स्तम्भों पर अपने जीवन-यापन की ऐसी कला सिखाता है जो आपको कहीं भी, कभी भी स्वधर्म से विचलित नहीं होने देता और दूसरों का आदर करते हुए स्वयं भी स्वाभिमान से रहना सिखाता है. हर स्थान पर कुछ अच्छाईयाँ और कुछ बुराईयाँ होती हैं. हमें हंस की भाँति अच्छाईयों को चुनना है और साथ ही बुराईयों में यदि सुधार कर सकें तो उसके लिए प्रयत्नशील होना है. यदि कुछ भी नहीं कर सकते तो कम से कम उनसे दूर रहना है. पराकाष्ठा में भगवद्गीता का श्लोक उद्धृत है “कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्माणि च कर्म यः। स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृतः॥१८॥ (चतुर्थ अध्याय) जो पुरुष कर्म में अकर्म देखे, और यह समझे कि करने वाला मैं नहीं हूँ बल्कि गुणों की अवस्था ही चिंतन में हमें नियुक्त करती है, “मैं ईष्ट द्वारा संचालित हूँ” ऐसा देखे और जब इस प्रकार अकर्म देखने की क्षमता आ जाए और धारावाहिक रूप से कर्म होता रहे, तभी समझना चाहिए कि कर्म सही दिशा में हो रहा है. वही पुरुष मनुष्यों में बुद्धिमान् है, मनुष्यों में योगी है, योग से युक्त बुद्धिवाला है और सम्पूर्ण कर्मों को करने वाला है. उसके द्वारा कर्म करने में लेशमात्र भी त्रुटि नहीं रह जाती.

श्रीराम मानव-जाति में भेदभाव की भावना मिटा “वसुधैव कुटुम्बकम्” की भावना जाग्रत करें. मानव न केवल अपनी प्रजाति वरन् सम्पूर्ण प्रकृति सहित ब्रह्माण्ड के प्रति उदारमना हो.

यह दीपावली सभी के हृदयों को आलोकित कर उनमें एक-दूसरे के प्रति सद्भावना संचरित करे.

दीपावली की अनंत शुभकामनाओं सहित, सस्नेह - स्नेह ठाकुर



भगवान श्री राम मन्दिर, अयोध्या

मदन लाल गुप्ता

हिंदू पक्ष का दावा रहा है कि बाबर से पहले भी १०३३ में मुस्लिम आक्रमणकारी सालार मसूद ने जन्मभूमि मंदिर को ध्वस्त कर दिया था। उसके बाद गहड़वाल वंश के राजाओं द्वारा इस पवित्र मंदिर का फिर से निर्माण (तीसरी बार) करवाया गया था। अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर पर विवाद की कहानी १५२८ से शुरू हुई।

बाबरनामा के अनुसार १५२८ में अयोध्या पड़ाव के दौरान बाबर ने मस्जिद निर्माण का आदेश दिया था। अयोध्या में बनाई गई मस्जिद में खुदे दो संदेशों से इसका संकेत भी मिलता है। इसमें एक खासतौर से उल्लेखनीय है। इसका सार है, 'जब तक जिसके न्याय के चर्चे हैं, ऐसे महान शासक बाबर के आदेश पर दयालु मीर बकी ने फरिश्तों की इस जगह को मुकम्मल रूप दिया।' हालाँकि यह भी कहा जाता है कि अकबर और जहाँगीर के शासनकाल में हिन्दुओं को यह भूमि एक चबूतरे के रूप में सौंप दी गई थी लेकिन क्रूर शासक औरंगजेब ने अपने पूर्वज बाबर के सपने को पूरा करते हुए यहाँ भव्य मस्जिद का निर्माण कर उसका नाम बाबरी मस्जिद रख दिया था।

चीफ जस्टिस रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली ५ जजों वाली सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने हिन्दू मन्दिर बनाने के लिए विवादित ज़मीन को एक ट्रस्ट को सौंपने का आदेश दिया था। ५ अगस्त का शुभ दिन हिन्दू धर्म के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। लगभग ५०० वर्षों के संघर्ष के पश्चात भारत के हिन्दुओं को राम जन्म भूमि अयोध्या में भगवान् राम का मन्दिर बनाने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। ६ दिसम्बर, १९९२ को अयोध्या में रामजन्मभूमि आंदोलन से जुड़े १५०,००० कार सेवकों ने विवादित ढाँचे को ध्वस्त कर दिया था। इसके पश्चात हिन्दू-मुस्लिम दंगों में लगभग २,००० कारसेवक पुलिस की गोली से मारे गए।



अयोध्या नगरी को दुल्हन की तरह सजाया गया। ३ अगस्त से ही हवन तथा कीर्तन का कार्य शुरू हो गया था और रात्रि में दिवाली मनाई जाती थी। देश तथा विदेश में भी कई नगरों में कीर्तन, भजन, आतिशबाजी और दिवाली मनाई गई और लड्डू भी बाँटे गये। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सुनहरे रंग का कुर्ता, सफ़ेद धोती और भगवा रंग का अँगौछा डाले एक सनातनी यजमान की वेशभूषा में हेलीकाप्टर से अयोध्या पधारे। ब्राह्मणों की मौजूदगी में प्रधानमंत्री मोदी ने विधि-विधान से भूमिपूजन करके ५ अगस्त २०२० को भगवान राम के भव्य मंदिर के लिए ४० किलो की चाँदी की ईंट रखकर राम मंदिर का शिलान्यास किया। रात्रि में दिवाली मनाई और योगी जी ने स्वयं आतिशबाजी चलाई।



अयोध्या में उन्होंने हनुमान गढ़ी में पूरे भक्ति भाव से आरती की, मंदिर की प्रदक्षिणा की और दक्षिणा भी अर्पित की। मोदी के सिर पर जब हनुमान जी के प्रसाद व आशीर्वाद के रूप में मंदिर के महंत ने पगड़ी रखी और रामनामी उनके गले में डाली तो प्रधानमंत्री ने श्रद्धाभाव से महंत का आभार जताया। उन्होंने प्रधानमंत्री से भिन्न एक सामान्य श्रद्धालु के रूप में रामलला के दरबार में साष्टांग दंडवत और जन्मभूमि की मिट्टी का तिलक भी किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डॉ. मोहन भागवत, उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मौजूद रहे तथा देश भर से साधु-संत आए हुए थे। कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए मेहमानों की संख्या सीमित रखी गई थी।

स्रोतों से पता चला है कि देश भर से श्रद्धालु मंदिर के निर्माण में उपयोग करने के लिए सिक्के, ईंटें और सलाखों के रूप में चाँदी और सोना भेज रहे हैं। वर्षों से भक्तों से एकत्र की गई "श्री राम नाम के साथ अंकित २००,००० ईंटों का उपयोग मंदिर की नींव बनाने के लिए किया जाएगा"। प्रस्तावित मंदिर के मुख्य वास्तुकार चंद्रकांत सोमपुरा के अनुसार संरचना को मंदिर वास्तुकला की "नगाड़ा शैली" में डिजाइन किया गया है (लोकप्रिय उत्तर भारतीय मंदिर निर्माण शैली)। मंदिर का आंतरिक गर्भगृह - जहाँ प्राथमिक देवता की मूर्ति स्थित है - अष्टकोणीय होगा। मन्दिर में तीन मंजिलों की बड़ी संरचना शामिल होगी जिसमें ३६६ खम्भे और पाँच गुम्बद होंगे। श्री सोमपुरा ने कहा कि मन्दिर आंदोलन से जुड़े लोगों के सम्मान में एक स्मारक भी बनाया जाएगा।

राम मन्दिर, अयोध्या का इतिहास : अयोध्या स्थित भगवान श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का पूरा इतिहास शब्दों में समेटना किसी के लिए सम्भव नहीं है। राम जन्म भूमि, हिन्दुओं के लिए तीर्थयात्रा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ब्रह्मानंद पुराण में एक श्लोक में "सबसे पवित्र और अग्रणी शहरों" में अयोध्या का नाम है, अन्य तीर्थ मथुरा, हरिद्वार, काशी, काँची और अवंतिका हैं। गरुड पुराण में अयोध्या को हिंदुओं के लिए सात सबसे पवित्र स्थानों में से एक कहा गया है, जिसमें वाराणसी सबसे पवित्र है।

मुगल शासन के दौरान पिछले ५०० वर्षों में हिंदुओं का जबरन धर्म परिवर्तन किया गया। लगभग ४०,००० हिंदू मंदिरों को नष्ट कर दिया गया। आज़ादी के बाद हमारी तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकारों ने बड़े गर्व से उनकी महिमा गाई, मुद्दों की पूरी तरह से अनदेखी की और वोट के स्वार्थ के लिए लोगों के एक विशेष वर्ग को खुश करने के लिए मुगल राज्य के हत्यारों का फर्जी इतिहास रचा और फैलाया। हिंदुओं को कोसना इन धर्मनिरपेक्षों के शब्दकोश में असली धर्मनिरपेक्षता है। यह कहते हुए कि भारत का इतिहास उतना पुराना है जितना कि मानव जाति का इतिहास अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भारत को अपनी विशाल सम्पदा, विविध संस्कृति और ज्ञान के लिए गोल्डन एलिफेंट के रूप में जाना जाता है, इस कारण भारत ने दुनिया के विभिन्न देशों को अपनी ओर आकर्षित किया; यह आकर्षण स्वर्णिम हाथी की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने और नष्ट करने के लिए किया गया। हिंदू मन्दिर धन का प्रमुख स्रोत थे और इस कारण से मन्दिरों (मूर्तियों) को नष्ट करने और लूटने वाले कई विदेशी आक्रमणों के प्रमाण हैं, गज़नी के महमूद से लेकर मुगल सम्राट औरंगजेब तक आक्रमणकारियों द्वारा भक्तों के साथ बलात्कार और हत्या भी की गई।

इस्लामी स्रोतों के विस्तृत साहित्यिक साक्ष्य हैं जो भारत में मुस्लिम शासकों द्वारा किए गए अपराधों का महिमामंडन करते हैं। इसे मुस्लिम इतिहासकारों ने स्वयं अच्छी तरह से प्रलेखित किया है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया है क्योंकि उनके अनुसार इस तरह के कर्म करके ये मुस्लिम शासक पैगम्बर मोहम्मद के इस्लाम और सुन्नत के सिद्धांतों का पालन कर रहे थे। मुगल शाही सेना ने बनारस के लगभग १००० मंदिरों को नष्ट करके उसी स्थान पर मस्जिदों का निर्माण किया। वर्ष AD १२०२ में, कुतुब-दीन ने मंदिरों को मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया। भारत में ७वीं शताब्दी में चीनी यात्री हेनत्सांग आया था, उसके अनुसार अयोध्या में हिन्दुओं का एक प्रमुख और भव्य मन्दिर भी था जहाँ रोज़ हज़ारों लोग दर्शन करने आते थे जिसे राम मन्दिर कहा जाता था।

इसके बाद यह उल्लेख मिलता है कि उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य एक दिन आखेट करते-करते अयोध्या पहुँच गए। सम्राट ने यहाँ एक भव्य मंदिर के साथ ही कूप, सरोवर, महल आदि बनवाए। उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि पर काले रंग के कसौटी पत्थर वाले ८४ स्तम्भों पर विशाल मन्दिर का निर्माण करवाया। इस मंदिर की भव्यता देखते ही बनती थी। गुप्तकालीन महाकवि कालिदास ने अयोध्या का रघुवंश में कई बार उल्लेख किया है। इसके बाद भारतवर्ष पर आक्रांताओं का आक्रमण और बढ़ गया।

विभिन्न आक्रमणों के बाद भी श्रीराम की जन्मभूमि पर बना भव्य मन्दिर १४वीं शताब्दी तक बचा रहा। १४वीं शताब्दी में हिन्दुस्तान पर मुगलों का अधिकार हो गया और उसके बाद ही राम जन्मभूमि एवं अयोध्या को नष्ट करने के लिए कई अभियान चलाए गए। मन्दिर की रक्षा के लिए हिन्दू अखाड़े के साधुओं को शहीद होना पड़ा। १५२७-२८ में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के एक सेनापति ने बिहार अभियान के समय अयोध्या में श्रीराम के जन्मस्थान पर स्थित प्राचीन और भव्य मंदिर को तोड़कर एक मस्जिद बनवाई थी, जो १९९२ तक विद्यमान रही।



स्निग्ध ज्योत्स्ना

डॉ. अरुण खेवरिया

मेरे उर अम्बर पर स्निग्ध ज्योत्स्ना बनकर छाए तुम
निर्झर जैसी थिरकन को जीवन में लाये तुम.

नीरवता छायायी थी चहुँ दिस
अंधकार गहरा था मन में
छम छम छुनछुन पायल ध्वनि सुन
नव स्फूर्ति जगी मेरे तन मन में
सात स्वरो की सरगम अपने संग लाये तुम
निर्झर जैसी थिरकन को जीवन में लाये तुम.

जगती के कण-कण में मानो
बही नेह की अविरल धारा
तंद्रा से मधुमास जगा
खिला प्रकृति का रूप निराला
रूप रंग की विपुल राशि को लेकर आए तुम
निर्झर जैसी थिरकन को जीवन में लाये तुम.

नवल तरंगों से उल्लासित
मन झूमा खुशियों से ऐसे
नदिया का कल कल निनाद सुन
चहक उठे हों पंछी जैसे
नई उमंगों को आँचल में भर लाये तुम
निर्झर जैसी थिरकन को जीवन में लाये तुम.

हाईवे

डॉ. संदीप अवस्थी

अँधेरा इतना घना था कि कुछ मीटर दूर का भी नजर नहीं आ रहा था। ऊपर से नवम्बर की सर्द रात थी। हाईवे का यह लम्बा हिस्सा दो लेन ही था। आधी रात हो चुकी थी। अचानक से शाम को आभा की मम्मी के गम्भीर हालात में भर्ती होने की सूचना मिलते ही वह चलने को बेचैन हो उठी थी। निकलते-निकलते भी दस बज गए थे, गोरखपुर वाराणसी से काफी दूर था फिर भी सुबह तक वह पहुँच जाते। घर को लॉक कर वह दोनों और दसवीं में पढ़ रही बेटी को लेकर निकल पड़े थे कार से। कुछ घण्टे बाद आधे सफर पर संजय ने एक मोटल पर कार रोककर सभी ने चाय आदि पी थी। अब वह सब नींद से दूर प्रेश थे। तभी कार हिचकोले खाने लगी।

"क्या हुआ ? पेट्रोल तो है? तुम हमेशा चेक करते हो।" सब ठीक-ठाक है। पता नहीं क्या हुआ? संजय के सँभालते-सँभालते भी कार बंद होने लगी। उसने एक किनारे कार की। इतने घने जंगल में ही खराब होना था इसे। यह इस हाईवे का वह हिस्सा था, जहाँ काफी दूर तक यही कच्ची-पक्की सब रोड थी बस। करीब दो किमी बाद ही वापस सिक्स लेन से यह जुड़ जाती। पर यह ...इसे भी अभी खराब होना था, संजय स्टेयरिंग पर हाथ पटकता बोला।

"पापा हम कहाँ है? मुझे बहुत डर लग रहा है", गार्गी, उनकी बेटी बोली। "डरते नहीं बेटा, जल्द चलेंगे यहाँ से" आभा ने बेटी को चिपकाते हुए कहा।

संजय दाएँ-बाएँ देखता कार से उतरा। कोई मिस्त्री भी कहाँ होगा रात के दो बजे। क्या रात यहीं बीतेगी? यह सोचकर उसने एक बारगी कार में चिपककर बैठे आभा और गार्गी को देखा। यहाँ इस सब रोड पर वाहन भी कम ही आते थे। बुरे फैसे, उसने सोचा। मोबाइल का नेटवर्क भी काम नहीं कर रहा था।

"अंदर आओ और बैठकर सुबह होने का इंतज़ार करो", उसकी समझदार, खूबसूरत पत्नी ने कहा। कार में बैठे-बैठे झपकी आने लगी, न जाने कितना समय बीता। कार के शीशों पर ठक-ठक की आवाज से उनकी तन्द्रा टूटी। देखा आगे एक बोलेरो खड़ी थी। और एक आदमी काँच के बाहर कुछ कह रहा था।

आभा बोली, "नहीं नहीं काँच मत खोलिए, यह लोग ठीक नहीं लगते।"

उसके हाथ काँच नीचे करते रुक गए। उसने बाहर देखा, अँधेरे में एक आदमी काँच के पास था और दो सामने। बोलेरो कार के आगे तिरछी थी। काँच वाला कुछ कह रहा था। आभा धीरे से बोली, मुझे यह सही आदमी नहीं लगते। रुको, बाहर मत जाओ। पापा, मुझे भी यह सही नहीं लगते।" नींद का असर, सर्दी, कार खराब और यह मददगार। वह कार का काँच नीचे करने ही वाला था कि टॉर्च की तेज रोशनी पीछे की सीट पर पड़ी। देर तक टार्च दोनों को देखती रही। कभी-कभी रोशनी भी कितनी चुभती है। वह उनको देखता कुछ चिल्लाया और हाथ से इशारा किया। दोनों लोग कार पर झपटे और दरवाजों के हैंडल खोलने लगे। सेंट्रल लॉक

था नहीं खुलना था नहीं खुले। भेड़ियों की तरह वह तीनों मुहँ पर कपड़ा बाँधे कार के चारो ओर घूमने लगे। पीछे आभा और गार्गी और सिमट गई। उसने कार के इग्नीशन को फिर कोशिश की। घर-घर की आवाज आई। भगाने की कोशिश कर रहा है यह तो, कोई बाहर से चिल्लाया। फिर हँसने की आवाज आई, कर ले कितनी भी कोशिश, पर बचेगा नहीं। वह तीनों भेड़ियों ने कुछ सोचा। उधर आभा को लग गया था कि यह लुटेरे कुछ भी कर सकते हैं। वह कोस रही थी अपने आपको कि क्यों उसने तुरंत चल पड़ने की जिद की? माँ को भाई ने भर्ती करवा दिया था। तो वह कल दिन में भी चल सकती थी। उधर संजय कुछ करने की सोच रहा था। तभी एक जोरदार लात दरवाजे पर पड़ी। लेकिन मजबूत गाड़ी थी, कुछ नहीं हुआ। फिर उसने दोनों हाथों का दुहथुड कार के काँच पर मारा। पर मजबूत काँच हिले भी नहीं। क्या वह सेफ थे? आभा ने एक पल सोचा, फिर पर्स से मोबाइल निकाला। लेकिन पूर्वी उत्तर प्रदेश के इस भाग में नेटवर्क नहीं था।

"कुछ नहीं होगा उस्ताद इससे। रुको कुछ करता हूँ। आसपास पत्थर भी नहीं है।" जल्दी कर, अबेर हो रही है। वह बोलेरो की तरफ लपका। आभा और गार्गी की चीख निकल गई। उसने बोलेरो से लोहे की एक मोटी छड़ निकाली थी। वह उसे लेकर कार के पीछे जाने लगा कि दूर किसी वाहन की हेडलाइट चमकी। वह ठिठक गया। छड़ वाला सड़क किनारे खेतों में छिप गया। क्या हमें मदद के लिए आवाज लगानी चाहिए? पर काँच नीचे नहीं कर सकते। फिर? उसने कार के पार्किंग सिग्नल ऑन किए। तेज हॉर्न बजाना प्रारम्भ किया। तभी एक तेज आवाज हुई। डंडे की चोट से लाइट टूटकर एक ओर लटक गई। उसकी आँखें सामने खड़े विंडस्कीन के पार खड़े, कपड़ा बाँधे व्यक्ति जो उनका सरगना लगता था, की लाल-लाल भेड़िए जैसी आँखों से टकराई। बायीं आँख के ऊपर एक मस्सा था। उसे कुछ स्ट्राइक हुआ। यह मस्साअरे हाँ, अभी जब वह मोटल पर रुके थे तो यह तीन लोग उनके आगे आकर बैठे थे और.....और वह सब बातें समझ गया। उसकी आँखों के सामने हाईवे के लुटेरे थे। न जाने कितनी घटनाएँ उसने पढ़ी थीं अखबारों में, वह आँखों के सामने घूम गई। मारकर लाशें नहर में फेंक देते हैं। महिलाओं के साथ.....वह सोच नहीं सका। आपादमस्तक काँप उठा। गर आभा ने जिद की थी उसी वक्त चलने की तो वह मना कर देता। उसे समझदारी दिखानी थी। ऊपर से बेटी को इतना लाड़ करता है वो कि उसे भी घुमाने के बहाने साथ ले आया। जबकि वह बेचारी मना कर रही थी कि पापा मैं यहीं रह लूँगी। सर्दी में भी उसके माथे और कनपटियों से पसीना बह उठा। तभी नजदीक आती कार तेज रफ्तार से गुजरी। कार वाले ने दो पल भी नहीं देखा कि कोई मुसीबत में था। वह तो हवा हो गया।

टॉर्च इस बार चमकी इतने नजदीक से मानो आभा और गार्गी को निगल जाना चाहती हो। घटाटोप अँधेरा, हाईवे पर खराब की गई कार और यह तीन भेड़िए। इतने नजदीक पीछे वाले काँच पर वह था कि उसकी मुहँ के तम्बाखू भरे पीले दाँत तक दिख रहे थे। वह समूचा ही आभा और गार्गी को निगल रहा था मानो। "हरामजादे, कुत्ते दूर हट, संजय चिल्लाया हाथों को लहराता। तभी सामने वाले ने स्क्रीन पर हाथ चलाया। एक छेद हो गया। कुल्हाड़ी की तीखी फलक उसे अपने गले में फँसती लगी।

यह सही है उस्ताद। पर साइड के काँच पर चलाओ। इससे तो देर लगेगी और दरवाजा नहीं खुलेगा। और काँच चुभेगा।

विंड स्क्रीन में छेद होते ही गार्गी कसकर माँ से लिपट गई। मम्मा, मम्मा, क्या होगा? यह मार डालेंगे हमें। नहीं मेरी बेटी, आपको कुछ नहीं होगा। आप बिलकुल मत डरो। कुछ करते हैं हम बेटे।" कह कर व्याकुल हो उसने कार के पीछे वाले काँच से बाहर देखा। उफ्फ, काँप गई वह। वहाँ काँच पर चेहरा लगाए वह मुँह ढके आदमी उसे ही देख रहा था। बेटी को और चिपका लिया उसने। तभी दूर किसी वाहन की लाइट चमकी। कुल्हाड़ी की जगह सम्बल से काँच तोड़ने को आमादा वह रुके, देखा, "यार, यह इबकी बार कोई आए, मैं काँच तोड़ दूँगा।" अरे! रुक तो सही, कोई गाड़ी है, निकलने दे। वैसे भी यह शहरी लोग इतने बेवकूफ होते हैं कि कोई भी मर रहा हो, इनकी बला से।" दूसरा वाला हँसकर बोला, "बाऊ के पास माल मोटा होना चाहिए। कार काफी मँहगी लग रही मन्नै।" मुझे तो पीछे वाला माल चाहिए, यह लाल आँखों वाला, जो नशे में भी था, बोला।

तभी वह गाड़ी पास आती धीमी हुई और साइड में रुकी। क्या हो रहा है? अभी तक क्यों रुके हो?" संजय ने देखा, यह तो पुलिस जीप थी। एक वर्दीधारी मोटा कुछ कह रहा था उनसे। उसकी जान में जान आई। वह कार खोलकर बाहर निकलने को हुआ। "रुको, देखो पापा," पीछे से गार्गी ने इशारा किया। वह पीछे देखने मुड़ा और हैरान रह गया। दूसरा पुलिस वाला जीप बंद करके न जाने कब कार की साइड से टॉर्च डालकर अंदर देख रहा था। और उन दोनों से हँस-हँसकर बात कर रहा था। "अब तक क्यों नहीं किया काम सूबेदार? ४ बजन लगे हैं। काम करना बंद करवा दूँगा इस रोड पर।" अरे साहब, कर ही रहे थे कि आप आ गए। अभी रुको, करते हैं आपके सामने ही।" "न यह सब मेरे जाने के बाद करियो। हिस्सा कल चौकी पहुँच जाए।" ताकीद कर वह दोनों पुलिस जीप में निकल लिए। अंदर आभा सन्न रह गई। मुझे काटो तो खून नहीं। गार्गी नहीं टोकती तो मैं कार से बाहर आ रहा था उन पुलिस वालों को देख, मदद के लिए। इस धरती पर जिसे जो काम मिला है वह उसे पूरी ईमानदारी से क्यों नहीं करता? हमे अपने बचने की अब कोई राह नजर नहीं आई।

अब वह सब और खूँखार हो गए। एक ने कहा, इसे समझाते हैं, उस्ताद! शायद समझ जाए अब तो।" "न, इब समझावे को टाइम गयो ताऊ। इब तो यह....." कुल्हाड़ी का तीखा फल क्षण भर चमका और ड्राइवर सीट के काँच में जा धँसा। दो चोटें और हम उसकी गिरफ्त में। मैंने तेज हॉर्न बजाना प्रारम्भ किया। लगातार। ब्लिंकर्स टूट चुके थे। तभी फिर किसी गाड़ी की लाइट चमकी। "रुक....इसे निकलने दे।" "जल्दी करो उस्ताद, अब सन्न नहीं हो रहा। पीछे वाली को पहले मैं ले जाऊँगा खेतन में। छोकरी ते ले लेना।" कहकर उसकी नशे से लाल आँखों में डोरे चमके। तभी वह कार नजदीक आती धीमी हुई। उन्होंने शायद हॉर्न की तीव्र आवाज सुनकर मुसीबत का अंदाजा लगा लिया था। हम तीनों की आँखों में आशा की किरण चमकी। अब शायद बच जाएँगे। वह धीमी होते-होते फिर तेज होकर निकल गई पास से।

शायद कुल्हाड़ी और चेहरों पर कपड़ा बाँधे इन लुटेरों को देख लिया था उस कार वाले ने। लुटेरों ने भी देखा। "उस्ताद जो करना है जल्दी करलो। वरना दिक्कत हो सकती है।" "अरे क्या दिक्कत, जब अभी थानेदार चक्कर लगाकर गया है।" गैंग लीडर बोला और फिर कुल्हाड़ी को तैयार करने लगा। आभा और गार्गी आने वाली विपत्ति से घबराकर ऐसे हो गए थे कि अब बेहोश हुए। संजय ने पीछे मुड़कर देखा और सामने काँच पर कुल्हाड़ी

चलाने को तैयार आतंक को देखा। यकीनन कुछ मिनटों में काँच टूटने वाला था और फिर....जो होता है बहुत भयानक होता। "तुम सावधान रहना और मौका देखकर भाग जाना। मैं बाहर जा रहा हूँ। कब तक डरे, सहमे रहेंगे। सामना करना ही अच्छा होगा। इन्हें बातों में लगाता हूँ। अपना पर्स लाओ।" तीखा, छुरे-सा समय गले पर धार-सा चल रहा था। "पापा..." कहते हुए गार्गी रोने लगी, "मत जाओ पापा।" धड़ाम की आवाज हुई। देखा कुल्हाड़ी का फलक निकल गया था। और वह उसे नीचे तलाश रहा था। दो पल मिल गए थे। "अच्छा जैसा कहा है वैसा करना यह बायीं ओर ध्यान रखेंगे। तुम्हें दाईं ओर सड़क के पार भागना है।" "और तुम? जब हम भाग जाएँगे तो तुम्हारा क्या हाल करेंगे यह जानते हो?" कहते कहते आभा की आँखें भर आईं। कुछ पल उसे देखता रहा वह। फिर दृढ़ता से बोला, ईश्वर ने चाहा तो जरूर फिर मुलाकात होगी। और कोई रास्ता नहीं। यह काँच टूटेगा, कार खुलेगी फिर हम सब। अभी मैं उतरकर कार का सेंट्रल लॉक कर दूँगा। तुम पीछे से जब मौका लगे दरवाजे खोलकर भाग जाना।" तभी गार्गी, जिसके आँसू सूखे नहीं थे, वह बिटिया बोली, "पापा, दोनों दरवाजे खोलकर भागेंगे तो यह तय नहीं कर पाएँगे कि किसे पकड़े? और हम आगे निकल जाएँगे।" मैंने सोचा और आभा की ओर देखा, "नहीं, बेटी को साथ लिए ही जाऊँगी। चाहे जो हो जाए, बेटी पर आँच नहीं आने दूँगी।" आभा के चेहरे पर अजीब-से भाव थे। उसने पर्स में से फल काटने वाला चाकू निकाल कर अपने सूट की जेब में छुपा लिया था। फलक मिल गया था और उसे वह सड़क पर ठोक कर ठीक कर रहा था। एक सामने था और एक ठीक पीछे।

"ठीक है फिर मैं निकलता हूँ।" और उसने कार लॉक को चुपके से अनलॉक किया और तेजी से बाहर आया। आते ही सामने वाला झपटा पर उसने कार गेट का सेंट्रल लॉक दबाकर उसे फुर्ती से बंद कर दिया। और हाथ उठाकर सामने बढ़ा। लुटेरे हतप्रभ रह गए। "आप लोग यह सब ले लो पर हमें शांति से जाने दो। आपकी बहुत मेहरबानी होगी।" उसने दोनों हाथों से अपना पर्स और आभा का पर्स सामने किया। तब तक कुल्हाड़ी तैयार करता और पीछे वाले ने उसे घेर लिया था। "उस्ताद, यह तो....फिर उसने बैग झपट लिया। खोलकर देखा। आभा के पर्स में ५०० के नए नोटों की गड्डी देख उसकी आँखें चमकी। फिर उसने मेरी ओर देखा, "श्यामू कवर रखियो।" "उस्ताद! कहीं नहीं जाने दूँगे इसे। तुम फिक्र मत करो।" उसके पर्स को खोला, वह भी नोटों से ठसाठस भरा था। जल्दी-जल्दी में वह बीस हजार ही ला पाया था। कपड़े बँधे चेहरे में उनकी आँखें चमकी। फिर चैन, अँगूठी, मोबाइल का नम्बर आया। "यह मोबाइल तो मैं लूँगा। उस्ताद! पिछली बार का इसने लिया था।" "अरे पकड़ा जाएगा", उस्ताद समझदार था। "नहीं उस्ताद, वह मुन्ना मोबाइल वाला है न वह इसका लॉक तोड़ लेता है। और फिर कोई चिंता की बात नहीं।" "अच्छा, ऐसा है तो ले लियो तू।" "अब ऐसा है बाबू.....अरे, अरे.... भाग रही हैं, पकड़ो उन्हें....." कहते कहते वह लपका। लेकिन मैंने उसे अपने हाथों में पकड़ लिया। "उन्हें जाने दो, वे निर्दोष हैं। उन्होंने कुछ नहीं बिगाड़ा तुम्हारा।"

तभी पीछे से एक ने कुल्हाड़ी से संजय पर वार किया। ऐसा लगा मानो शरीर में आग लग गई हो। शिथिल होकर गिरते-गिरते उसने देखा बायीं ओर की झाड़ियों में आभा और गार्गी घुस रही हैं। वह राहत की

साँस लेने ही वाला था कि एक ने हाथ में पकड़ा डंडा फेंका। सनसनाता डंडा जाकर खेत में आधी घुस चुकी गार्गी के पैरों पर जाकर लगा। वह लड़खड़ाई, सँभलने को हुई....और फिर गिर पड़ी। "श्यामू भाग, पकड़ छोरी को।" आभा अँधेरे में दूर निकल गई थी। पर गार्गी....।

कुछ मिनटों बाद ही चाकू मेरे गले पर था, गार्गी को कसके एक पकड़ा हुआ था और तीसरा कार से दोनों सूटकेस को अपनी गाड़ी की डिक्की में रख चुका था। फिर वह मेरे पास आया। कुछ पल मुझे देखा, और फिर उसके लोहे जैसे सख्त हाथ मेरे मुँह और शरीर पर पड़ने लगे। गालियाँ बकता वह मुझे पीटता रहा। "साले, हमसे होशियारी दिखाएगा। हम्म। और अब देख तुम्हारी लाशों के भी पता नहीं चलेगा।" मैं खामोशी से पीटता सोच रहा था कोई रास्ता। "बेटी को जाने दे। बच्ची ने तेरा क्या बिगाड़ा है? तुम्हें जो चाहिए था मिल गया।"

"उस्ताद, कुछ करो। बहुत दिन हो गए। मैं इसे लेकर जा रहा हूँ।" श्यामू की भूखी निगाहें गार्गी को कसके जकड़ी थीं। "पापा..." गार्गी चीखी। "हरामजादे, बच्ची को छोड़ दे।" उसने दो पल संजय को देखा और उसके पेट पर जोर से लात जमाई। "चुप, अब बोला तो काटके फेक दूँगा।"

"क्या श्यामू, जाने दे इसे? काम तो हो गया, माल भी आ गया।"

"अरे उस्ताद, इतने दिनों बाद तो मिली कोई.... और वह तो भाग गई जो जमी थी।"

"हाँ, ठीक है, तेरी बात पर देख वह अँधेरे में यहीं कहीं होगी। अभी बुलाते हैं उसको"--- कहकर वह गार्गी के पास आया। गार्गी सिकुड़कर अपना विरोध दर्ज कराती पर उसके दोनों हाथों को वह जकड़े हुए था। तभी उसने गले पर चाकू रख दिया। पंद्रह साल की गार्गी, जिसने अभी दुनिया ढंग से देखी भी नहीं थी। और अपने पापा के सामने वह उस तरह मौत के इतनी नजदीक। "पापा, मम्मी बचाओ।" उसकी मासूम आवाज रात के अँधेरे में दूर तक गूँजी। "अभी देखो क्या होता है"....कहकर उसने लड़की के बालों को सहलाया और अचानक कसके खींचा। पीड़ा से गार्गी की आँखों में आँसू आ गए। वह उसे खींचता हुआ आगे खेत के सामने ले आया, "श्यामू टॉर्च दिखा।" वह क्या करना चाहता था? शायद.....और मैं तड़पा, बेटी चीखने लगी। मैंने कोशिश की, "छोड़ दो मेरी बेटी को, तुम जो कहोगे मैं करूँगा। रहम करो उस पर।" उसने कपड़ा बँधे चेहरे से मुझे देखा, मुस्कराया, कुछ बोला नहीं।

तब तक पुरवइया चलने लगी थी, वह मुड़ा और जोर से बोला, "देख, तेरी छोरी की गर्दन चाकू पर है मेरे। तू मुझे सुन रही है, देख रही है। जहाँ भी छुपी है बाहर आजा। वरना इसका क्या अंजाम होगा, तेरे से छुपा नहीं है।" कहकर उसने गार्गी के बालों को खींचा, गार्गी चिल्लाई, "मम्मी मत आना बाहर। यह लोग बहुत खराब हैं।" सारा खेल स्पष्ट था। बहुत ही खतरनाक, मक्कार लोग थे। मुझे डर लगने लगा कि कहीं आभा आ न जाए वापस। और उसके आगे क्या होगा यह छुपा हुआ नहीं था। कुछ देर तक वह कान लगाए आहट लेता रहा, फिर बोला, "देख तेरी छोरी को छोड़ दूँगा, अगर तू आ जाती है। बोल या छोरी को ही....."। मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। इरादे साफ थे। बड़ी देर से कोई गाड़ी भी नहीं निकली थी। "तू मत आ फिर। आज चलो इसी की बलि चढ़ेगी।" वह मुड़ा ही था कि सामने खेत में आहट हुई। कुछ झाड़ झंकाड़ चरमराया। "मैं आती हूँ बाहर,

पर मेरी बेटी को छोड़ दो। उसे जाने दो।" दूर से आती आभा की आवाज में माँ की ममता ही नहीं, औरत की मजबूरी और बेबसी थी। वह रुका, ठिठका, अपने दोनों साथियों को विजयी भाव से देखा, मेरी ओर देखा फिर बोला "तू बाहर आजा इसे छोड़ता हूँ।" मैंने देख लिया अब कुछ नहीं किया तो भी जान जानी ही है। जान की बाजी लगानी ही होगी। एक मेरे पर कुल्हाड़ी ताने था। दो वहाँ आगे थे। लेकिन गार्गी उनके कब्जे में थी। कुछ करता तो वह उसे मार देते। यह इतने धूर्त होंगे, सोचा न था। "बाहर आने के बाद तुमने नहीं छोड़ा तो? और वैसे भी मेरे पति तुम्हारे कब्जे में हैं। तो मेरी बेटी को जाने दो, मैं बाहर आती हूँ। वरना कुछ ही देर में सवेरा होने वाला है।" वह ठिठका, रुका, सोचा और बोला, चल तेरी ही बात सही।" "अरे उस्ताद, यह क्या कर रहे हो? श्यामू ने भागकर खेत में जाती गार्गी को देख हड़बड़ी में कहा। "चिंता मत कर रे, वह आएगी, जरूर आएगी, नहीं आई तो ".....उसका स्वर क्रूर हुआ, "विधवा बनकर रहेगी।" यही अवसर देख संजय ने अपने को छुड़ाने के लिए जोर लगाया। "बाबू, यह पहलवान की पकड़ है। ऐसे ना छूटेगी। और हिलडुल मत करियो, वरना मेरा दिमाग चल गया न तो यही मरा मिलेगा।"

"तुम्हारा क्या बिगाड़ा है हमने? सारा माल ले लिया तुमने। अब हमें छोड़ दो। क्या तुम्हारे घर में बहू बेटियाँ नहीं हैं? वैसे ही हम हैं। रहम करो। चाहे तो कार भी ले जाओ। उनका लीडर कुछ देर अँधेरे में देखता रहा, "जल्दी आती है बाहर कि मैं आऊँ अंदर?" फिर घूमा और बोला, "देखो बाउजी, हम हैं हालात के मारे। हमें भरोसा नहीं कब तक जिन्दे रहेंगे? घरों में खाने को नहीं। भूखे पेट रह-रहकर दिमाग कुंद हो गया। मजबूरी, हमाली सब की। पर" कहकर रुका, ठिठका, फिर गहरी साँस ली, "सब जगह पैसे की माया। तुम लोगों की दुनिया इतनी क्रूर है कि हमारे जैसे लोगो को इंसान ही नहीं मानती। मदद माँगते हैं तो पहले शक करते हो हम पर कि यह झुट बोल रहा है। मेरी घरवाली बीमार पड़ी और सरकारी अस्पताल में तड़प-तड़प कर मर गई। डॉक्टर पाँच हजार रुपए के बिना आपरेशन नहीं कर रहा था। मैंने पाँव पकड़े, हाथ जोड़े उसको कहा कि पाई-पाई दे जाऊँगा कर दे ऑपरेशन बच जाएगी। तुझे दुआएँ मिलेगी। पर साहब नहीं माना वो। घर से आया ही नहीं। मर गई और साथ में उसके पेट में नन्ही सी जान भी चली गई।" कहकर वह रुका, इशारा किया, 'यह दोनों तब वहीं बाहर खड़े थे जब मैं एम्बुलेंस के पैसे नहीं होने पर घरवाली को साईकल पर लेकर धीरे-धीरे सिर झुकाए जा रहा था। और उसकी लाश कभी टिककर ही नहीं बैठ रही थी। कभी यहाँ तो कभी वहाँ से झूल रही थी। बहुत चुलबुली थी न, हमेशा हँसती रहती थी। घर में कुछ नहीं होता तो भी हँस के कहती, आज मुन्नी के बापू हम हवा खाकर सोएँगे।" कहकर वह हँसा, मानो वह सामने ही हो। फिर आँखे पोछता बोला, 'इन दोनों ने मुझे तब सँभाला, हाथ बँटाया। क्रियाकर्म तक साथ रहे। और तबसे साथ हैं।" गार्गी जरूर आभा के पास पहुँच गई थी। मैंने देखा, अँधेरा घना था, जरूर तड़के का वक्त हो रहा था। "पहला नम्बर उसी डॉक्टर का लाग्या। "श्यामू बोला", उसे उस पल्ले वाले हाईवे पर घेरा और तड़पा तड़पाकर मारा। जो सामान था लूट लिया, ताकि मामला लूट का लगे " तब जब कुछ माल मिला तो घरों में रोशनी आई, पेट में अन्न गया। पर यह पंडित नहीं

माना। बोले कि गलत है। बदला हो गया अब बंद करो।" "हम बैठे रहे कुछ समय। पर करते क्या? वही नरक और रास्ते बंद। जो लम्बरदार कहे उसी को सरकारी योजना में काम मिले। हमे नहीं।"

पंडित कुछ किताब-विताब पढ़कर आया और बोला कि यह शोषण चलता रहेगा। हमे इसे कम करना है तो ताकत का इस्तेमाल करना होगा। इन सभी अमीरों को मारना होगा।....पंडित बोला. "तब से यह हम काम कर रहे हैं भैया। और एकाध बार पकड़े गए तो फिर तीन की जगह चार हिस्से होने लगे। अभी गया न वह चौथा हिस्सेदार।" कहकर उसने गुटखा सड़क पर फेंका। "अगर मेरी कार खराब न होती तो" संजय तड़पकर बोला। "तो क्या"? फिर श्यामू ठहाका मारकर हँसा, तुम जब चाय पी रहे थे तो साइड में खड़ी तुम्हारी कार के एग्जास्ट पाइप को मैंने ही लकड़ी के टुकड़े से ब्लॉक किया था। यह देखो....वह पीछे गया और झुककर पाइप में से लकड़ी के टुकड़े को खींचकर दिखाता बोला, अब तुम्हारी गाड़ी एकदम सही है।" मैं क्षोभ और बेबसी से दाँतो भींचता रह गया। वह तो कार ढाबे के साइड में नहीं थी, वरना कार के नीचे घुसकर पेट्रोल नली काटने में यह भी माहिर है, फिर मुश्किल से १ किमी बाद पेट्रोल खत्म तो कार बंद। तो तुम अपनी लापरवाही की कीमत चुका रहे हो। उसने कुल निष्कर्ष बताया। तभी "उस्ताद, वह देखो....।" खेत के पीछे खुले हिस्से से कोई आ रहा था। टॉर्च की रोशनी उस तरफ घूमी। आभा, उसकी पत्नी आ रही थी। चेहरे पर अजीब से भाव लिए वह एक माँ थी, पत्नी थी। सीता थी, द्रोपदी थी, जो फिर दाँव पर थी। सैंकड़ो साल से हर ताकतवर, आतताई की जीत स्त्री को कुचले बिना पूरा नहीं होता। वह जो नारी है, धरा है, सृष्टि का आधार है। वह शायद इन आतताइयों को जन्म देने के अपराध का ऋण हर सदी में, हर दिन चुकाती है। चुका रही है। उस्ताद के इशारे पर आभा को लेकर श्यामू उसी खेत के अंदर जा रहा है।

कार हाइवे पर आ गई थी। दूर सूर्य की लालिमा दिखाई दे रही थी। नए दिन के आगमन में आसमान धीरे-धीरे सज रहा था। उसने कार को फ्रास्ट लेन में डाला और अस्सी के ऊपर कार उड़ती हुई जाने लगी। उधर खेत के पिछले हिस्से में तीन लाशें पड़ी मानो बता रही थीं, कभी भी कुछ भी, किसी के भी साथ हो सकता है।

"उनको धन्यवाद तो दे देती!" "समय ही कहाँ था? बस जल्द निकलने को ही वह कह रही थीं। आभा पीछे की सीट पर बेंटी को चिपकाए सुकून से बैठी थी। सारा घटनाक्रम मानों उसके साथ हुआ ही नहीं, वह एक बुरा सपना था जिसमें नारी की पीड़ा दैवीय शक्ति से हर ली गई थी। श्यामू जब और अंदर गया खेत के पिछले हिस्से में उसे लेकर तो मानो उस पर बिजली गिरी। हँसिये के एक ही वार से उस ग्रामीण महिला ने उसके दिल को छिन्न-भिन्न कर दिया। जमीन पर गिरने से पहले वह मर चुका था। कुछ देर के बाद जब सब्र नहीं हुआ तो उस्ताद अंदर आया। आने से पहले वह हाथ मुहँ बाँध कर संजय और गार्गी को कार में पटक आया। इस बार घायल सिंहनी की तरह वार आभा ने किया। आवाज निकलने से पहले गला आधा कट गया था। तीसरा बाहर था भोर बस होने वाली थी। उसे स्त्री स्वर की पुकार सुनाई दी। अपनी बारी की खुशी में वह अंदर बढ़ चला। दिशा मैदान को आई वह महिला आभा को हाथ पकड़कर सड़क पर लाई। जा जल्दी से चली जा यहाँ से। भूल जा यह सड़क, यह मोड़। कभी मत आना यहाँ। कहे के वह मुड़ी और खेत के पास के रास्ते पर चलती हुई अंधकार में विलीन हो गई

अनुत्तरित प्रश्न

अविनाश तिवारी

कुछ प्रश्न अनुत्तरित रह गए हैं।
 कल थे जो हाकिम तजुर्बेदार आज निरुत्तर रह गए हैं।
 क्यों कृष्ण बन कोई चीर बचाता नहीं है।
 बढ़कर गोवर्धन कोई उठाता नहीं है।
 एकलव्य खड़ा अँगूठा कटा दिखा रहा,
 द्रोण अब चाटुकारिता का गुर है सीखा रहा।
 हैं शकुनि छद्म वेश में पासा झूठा फेक रहे
 दुर्योधनों की फ़ौज खड़ी भीष्म तमाशा देख रहे।
 चक्रव्यूह में अभिमन्यु फँसा अर्जुन गांडीव रख रहे हैं
 कुछ प्रश्न अनुत्तरित रह गए हैं।
 द्रौपदी की चीत्कार भारी
 कितनी अहल्या आज नारी
 लुटती अबलाएँ बने सब बाजारी
 जाने कितने दुःशासन घूम रहे हैं
 कुछ प्रश्न अनुत्तरित रह गये हैं।
 क्यों होता बौना सत्य
 असत्य की मंडियों में
 बिक रहा ईमान जहाँ
 स्वार्थ के अंधकार में
 युधिष्ठिर कितने बिक रहे हैं
 कुछ प्रश्न अनुत्तरित रह गए हैं।

?

भाषाई समरूपता से अखण्डित राष्ट्र की परिकल्पना

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

माँ, माटी और मातृभाषा की अनिवार्यता और यथोचित सम्मान की चाह होना हर भारतवंशी का कर्तव्य भी है और नैतिक जिम्मेदारी भी। राष्ट्र केवल लोग नहीं बल्कि वहाँ का समाज, संस्कृति, लोगों के अंदर की भावना, वहाँ की भाषा, वहाँ की जिम्मेदार व्यवस्था मिल कर बनाते हैं। और राष्ट्र के सम्पूर्ण तत्व की व्याख्या उस राष्ट्र का उपलब्ध ज्ञान भंडार ही कर सकता है, वहाँ की शिक्षा व्यवस्था से उसकी प्रासंगिकता प्रचारित होती है। उस राष्ट्र की आंतरिक अखण्डता और उसे एक सूत्र में बँधे रहने की आवश्यकता का एकमात्र समाधान भाषाई समरूपता है, यानी 'एक देश-एक जनभाषा' की अनिवार्यता होने से सम्पूर्ण राष्ट्र में सामान्य लोक व्यवहार का सहज और सरल हो जाना निहित है। ऐसा इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि विभिन्न भाषा-भाषियों के मध्य आपसी सामंजस्य स्थापित करने के लिए किसी एक बिंदु का एक जैसा होना जरूरी है। किंतु जहाँ बात संवाद की आती है वहाँ संवाद का प्रथम सूत्र ही भाषा का एक होना है।

वर्तमान में हिंदुस्तान में लगभग ५०० से अधिक बोलियाँ व २२ भाषाएँ उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में जब तमिलनाडु से व्यवहार करना हो तो व्यक्ति को तमिल सीखना होगी और जब पंजाबी से व्यवहार करना हो तो पंजाबी। ऐसे में सामान्य बोलचाल की भाषा एक जैसी नहीं होने से संवाद की स्थापना असम्भव है, और बिना संवाद के व्यापार, विनिमय, रिश्तेदारी आदि सभी ताक में रह जाते हैं। अन्य प्रान्त के लोगों में संवाद की सफलता के लिए एक मध्यस्थ भाषा का होना अत्यंत आवश्यक है।

इस कमी को अँग्रेजी भी पूरा कर सकती है किंतु अँग्रेजी स्वभाषा नहीं है, और भारत चूँकि ग्राम प्रधान राष्ट्र होने से आज भी अंचल में अँग्रेजी प्रासंगिक और सहज नहीं है। इसीलिए हिंदी भाषा ही जनभाषा के रूप में एकमात्र श्रेष्ठ विकल्प उपलब्ध है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने लिखा है कि -

‘निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।’

निजभाषा का महत्व सदा से ही अपनेपन के साथ संस्कार सींचने हेतु आवश्यक माना गया है। आरम्भिक दौर में प्राकृत, पाली से सजा राष्ट्र का तानाबाना देवभाषा संस्कृत के प्रचारित होने के बाद सज नहीं पाया, संस्कृत भी आज के दौर में जनभाषा नहीं है क्योंकि उसे बोलने-समझने वाले लोग अब मुट्ठी-भर शेष है।

प्राकृत-पाली के साथ संस्कृत निष्ठ हिन्दी का जन्म हुआ और यह हिन्दी ने जनता के बीच क्षेत्रीय भाषाओं से अधिक स्थान प्राप्त किया।

क्षेत्रीय भाषाओं का अपना एक सीमित दायरा है इसमें कोई संशय नहीं है, और आज हिंदुस्तान के ५७ प्रतिशत लोगों की मातृभाषा हिंदी ही है। शेष ४३ प्रतिशत लोग भी हिंदी से अपरिचित नहीं हैं, वे जानते-

समझते हैं किंतु उनकी स्थानीय भाषाओं में वे ज्यादा दक्ष हैं, ज्यादा प्रवीण हैं। इसीलिए जनभाषा के तौर पर हिन्दी की अस्वीकार्यता नहीं हो सकती, रही बात हिन्दी के विरोध की तो यह केवल भ्रम से उत्पन्न या कहे राजनैतिक प्रेरित विरोध के स्वर हैं। क्योंकि हिन्दी के प्रचारकों ने जिस तरह हिन्दी को एक संस्कृति ही बना कर प्रस्तुत किया यह बहुत गलत है।

हिन्दी एक भाषा है, न कि अकेली एक संस्कृति या धर्म। हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान की सोच से ही हिन्दी भाषा का हृथ बिगड़ा हुआ है। भाषा महज अभिव्यक्ति का माध्यम और जनसंवाद का केंद्र है। यह कदापि सत्य नहीं है कि यदि हिंदी भाषा होगी तो हिन्दू राष्ट्र बनेगा। आज चलन में अंग्रेजी भाषा का प्रभाव ज्यादा है, तो क्या हम यह मान ले कि देश फिर इंग्लिशतान या ईसाईयत की तरफ बढ़ गया? या देश पुनः गुलाम हो चुका?

भारत एक गणतान्त्रिक राष्ट्र है, यहाँ प्रश्न अपनी जनभाषा के सम्मान का है न कि किसी धर्म के आधिपत्य का। भाषा किसी धर्म या पंथ की प्रतिलिपि नहीं होती, भाषा तो संवाद और संचार का माध्यम है। यहाँ बात स्वभाषा की स्थापना की है, न कि धर्म के साथ जोड़ कर भाषा की हत्या की।

हाल बुरा तो इसी सोच के चलते उर्दू का भी हुआ है।

उर्दू के उम्दा फनकार राहत इंदौरी जी का शेर है-

क़त्ल उर्दू का भी होता है और इस निस्वत से,

लोग उर्दू को मुसलमान समझ लेते हैं

जब हिन्दी को हिन्दू और उर्दू को मुसलमान माना जाता है तो इन्हीं खोखले आधारों से भाषा के कारण युद्ध और विरोध का जन्म होता है। इसी पर तथाकथित लोगों को राजनीति करने का मौका मिल जाता है, इसे वे एक संस्कृति या धर्म को थोपना बताकर एक जनभाषा की हत्या कर देते हैं। भाषा मनोवैज्ञानिक प्रभाव का कारक हो सकती है पर वो कभी भी किसी धर्म की ठेकेदार नहीं होती।

विखण्डनवादी सोच के चलते हिन्दुस्तान में आज सांस्कृतिक अखण्डता खतरे में है। क्योंकि हिन्दी कहीं थोपी नहीं जा रही, जो लोग कहते हैं कि आप हमारी दक्षिण भारतीय भाषा सीखिए, तो वे भी ये बताएँ कि कितने प्रतिशत लोगों तक संवाद उससे सहज होगा, मात्र ८ से १० प्रतिशत लोगों से और हिन्दी के कारण कम से कम ५७ प्रतिशत और अधिकतम सम्पूर्ण हिंदुस्तान से।

क्योंकि वर्तमान समय में यह कटु सत्य है कि अहिन्दी भाषी भारतीय भी हिन्दी तो समझते-बोलते हैं। बस चूँकि यह राजनीति प्रेरित एजेंडा बना इसीलिए हिंदी के बहाने हिंदुस्तान का विरोध शुरू हुआ।

वैश्विक लोकभाषा सर्वेक्षण विभाग की रपट कहती है कि 'जो बच्चे एक से अधिक भाषाओं में दक्ष होते हैं वे अन्य बच्चों की तुलना में ६७ प्रतिशत अधिक बुद्धिमान होते हैं। इसीलिए माँ-पिता को यह चाहिए कि बच्चों को मातृभाषा, राजभाषा हिंदी व अन्य विदेशी भाषा यानी अंग्रेजी, फ्रेंच, या अन्य भाषा सीखना चाहिए।

कश्मीर या अन्य जिन राज्यों की आय का मूल स्रोत पर्यटन है वे इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि उनके राज्य में ज्यादातर पर्यटक हिंदी पट्टी से आते हैं, और यदि आपके यहाँ के स्थानीय दुकानदार, रहवासी लोग यदि हिन्दी नहीं समझेंगे, बोलेंगे तो पर्यटकों को कैसे आकर्षित कर पाएँगे, इससे तो उनका धंधा चौपट होगा, साथ ही पर्यटकों की संख्या में गिरावट आएगी और इससे राजस्व की हानि होगी यह तय है। एक भाषा के कारण यदि ऐसा भी होता है तो यह राज्य के लिए नुकसानदायक है। इसी तरह बात यदि संस्कारों की है तो भारत की सामाजिक व्यवस्था में संस्कारों का बीजारोपण दादा-दादी व नाना-नानी की कहानियों के माध्यम से होता है, और दादा-दादी व नाना-नानी प्रायः मातृभाषा में दक्ष होते हैं जिससे उन बच्चों को मिलने वाली संस्कार शाला अपनी मातृभाषा की प्रासंगिकता बनी हुई है। इसीलिए भारत की मेधा को, बच्चों को हिंदी या मातृभाषा में दक्ष रखना ही होगा।

२३ साल बाद राज्यसभा पहुँचे एमडीएमके नेता वायको ने भाषाई अलगाववाद की राजनीति को संसद से हवा दी है। वायको ने कहा कि, 'आज हिंदी की वजह से (संसद में) बहस का स्तर गिर गया है। वे सिर्फ हिंदी में चिल्लाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी हिंदी में ही संसद को सम्बोधित करते हैं।' उन्होंने पीएम मोदी पर कड़े प्रहार के लिए उनकी तुलना प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से की और कहा कि नेहरू संसद के हर सत्र में भाग लेते थे जबकि मोदी सदन में मौजूद होते हैं।

वायको ने आगे कहा, 'वाजपेयी अंग्रेजी बोला करते थे। मोरारजी देसाई भी संसद में इंग्लिश बोलते थे। आप यह नहीं कह सकते कि वे हिंदी के मुरीद नहीं थे। इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी, पीवी नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह भी सदन को अंग्रेजी में सम्बोधित करते थे।' उन्होंने कहा कि सिर्फ मोदी ही बार-बार हिंदी के प्रति प्यार जताते रहते हैं। उनकी नजर में हिंदी बोलने के पीछे प्रधानमंत्री की भावना 'हिंदी, हिंदू, हिंदू राष्ट्र' की है। एमडीएमके महासचिव ने कहा कि जब तक संसद में संविधान की मान्यता प्राप्त सभी २८ भाषाओं में बातचीत शुरू नहीं हो जाती, तब तक सिर्फ अंग्रेजी में ही बातचीत होनी चाहिए।

सम्भवतः वायको इस बात को भूल गए कि हिन्दी भाषा भारत के ५७ प्रतिशत लोगों की मातृभाषा या कहेँ प्रथम भाषा है। जबकि अंग्रेजी महज ५ प्रतिशत लोग भी ठीक से नहीं बोल-सुन पाते हैं। स्पष्ट रूप से वायको या तो भारत के भूगोल से अनभिज्ञ था या फिर उनकी भाषाई राजनीति का यह हिस्सा है। वैसे भी वायको जैसे लोगों के विशेष अंग्रेजी प्रेम से न तो संसद में कुछ फर्क पड़ना, न ही राष्ट्र के लोगों में। क्योंकि वायको जिस राजनैतिक दल से सबद्धता रखते हैं उस दल का मुख्य ध्येय ही हिन्दी विरोध है। और हिंदुस्तान में हिन्दी का विरोध करने वाले लोग उन ५७ प्रतिशत लोगों के संख्याबल व स्वाभिमान को सम्भवतः न समझने की भूल कर रहे हैं, जो कतई स्वीकार नहीं होगी।

हिंदी न केवल एक भाषा है बल्कि संवाद का सर्वोच्च शिखर भी आज हिन्दुस्तान में यही है। हिन्दी के विरोध स्वरूप जन्मी राजनैतिक पार्टी के मुखिया करुणानिधि का एक बयान यह भी था कि मेरी हिन्दी मे

अनुवादित पुस्तक की बिक्री ज्यादा हुई है, इससे यह स्पष्ट है कि भाषा को राजनैतिक मुद्दा बनाकर विरोध तो कर रहे हैं, किन्तु दबे स्वर में ही सही पर हिन्दी का महत्व भी समझते हैं।

हिन्दी भाषा की सम्पूर्ण राष्ट्र में अनिवार्यता इसलिए आवश्यक नहीं है कि उससे हिन्दी प्रदेशों के मान या किसी पंथ, धर्म का गौरव बढ़ेगा, बल्कि इसलिए आवश्यकता है क्योंकि इसी से सम्पूर्ण राष्ट्र में एक सूत्रीय संवाद और सम्पर्क के साथ समन्वय स्थापित होगा, प्रगति के नए द्वार खुलेंगे, व्यापार का क्षेत्र विस्तार होगा, और यदि हमारा राष्ट्र आंतरिक तौर पर मजबूत होगा तो निश्चित मानिए वैश्विक रूप से भी हम मजबूत होकर आगे बढ़ेंगे।

क्योंकि सम्पूर्ण देश में जब भाषा की एक सूत्रीय स्थापना होगी तो देश का अंतिम वर्ग भी राष्ट्र की प्रगति के लिए भाषा और क्षेत्र बंधन से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से पूरे देश में काम करेगा, जहाँ दलित, वंचित और शोषित जैसी कोई व्यवस्था ही नहीं पनपेगी, राष्ट्र को जिन राजनैतिक मुद्दों ने कमजोर कर रखा है वे मुद्दे शिक्षा के बढ़ते स्तर के कारण गौण हो जाएँगे। विकासशीलता की इबारत लिखना है वो सबसे पहले पूरे देश को एक सूत्र में पिरोना होगा। देश के लोग ही देश की ताकत बनेंगे। यदि वे धर्म, जाति, समाज, क्षेत्र, भाषा या कानून के टुकड़ों में बँटे रहे तो कभी एक नहीं होंगे और बिखराव में तोड़ना आसान है। संगठित लोगों में विघटन सरल नहीं है। हिन्दी की अनिवार्यता से राष्ट्र की अखण्डता परिभाषित हो सकती है। आज यदि हिंदी के गौरव की पुनर्स्थापना करना है तो देश की भाषाई आधार पर एक रूपता से रंगाई करनी चाहिए। हमें सोच बदलनी होगी, तभी प्रगति का पथ प्रदर्शित होगा। अन्यथा ढाक के तीन पात।



जैसे चींटियाँ लौटती हैं

केदारनाथ सिंह

जैसे चींटियाँ लौटती हैं
बिलों में
कठफोड़वा लौटता है
काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई-अड्डे की ओर
ओ मेरी भाषा
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते-रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा।

राम कथा में वैश्विक मूल्य

डॉ. विदुषी शर्मा

भारतवर्ष में सत्य सनातन धर्म की पहचान है रामायण। युगों-युगों से इस धरा पर श्री रामचंद्र जी का नाम सदैव ही लिया जाता रहा है और आने वाले युगों तक भी लिया जाता रहेगा क्योंकि -
"कलयुग केवल नाम अधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहीं पारा ।"

यह चौपाई केवल एक उदाहरण ही नहीं है अपितु इसमें सोलह आने सही बात कही गई है। राम कथा और रामायण ऐसे विषय हैं जिन पर कितने ही शोध हो चुके हैं, हो रहे हैं और आगे भी होते ही रहेंगे क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा जो भी ग्रंथ लिखे गए हैं वह इतने सत्य, इतने प्रामाणिक और इतने प्रासंगिक है, इतने सार्वकालिक हैं कि उन्हें जिस भी युग में, जिस भी काल में पढ़ा जाएगा या पढ़ा जाता रहा है उनमें से कुछ नए तथ्य ही निकल कर सामने आते हैं। वह एक ऐसे अथाह सागर के समान है जिसमें मंथन करने पर केवल अमृत ही प्राप्त होता है और यह हमारी निष्ठा है, परिश्रम है, साधना है, श्रद्धा है, विश्वास है, आस्था है, भक्ति है, धर्म है कि हम उस में से कितना अमृत निकाल पाते हैं। राम कथा और कृष्ण कथा भारतवर्ष में सदैव ही चलती रहती हैं। यह इस बात का जीवंत उदाहरण है कि वे जीवंत रूप में इन कथाओं के माध्यम से प्रत्येक भारतवासी के हृदय में निवास करते हैं। वरना हर साल वही रामायण हर साल वही कथा हर समय वही रामचरितमानस का गान फिर भी लोग सुनते हैं, समझते हैं, भावविभोर हो जाते हैं, क्यों ?

यह इसलिए कि इन कथाओं के माध्यम से हम सदैव ही उनके चरित्र का स्मरण करते हैं। उन्हें अपने पास समझते हैं, मानते हैं, उनकी भक्ति में लीन हो जाते हैं, नतमस्तक होते हैं। यह हमारी सत्यता का प्रमाण है और प्रभु भक्ति का एक सरल उपाय है। हिंदू धर्म में अभिवादन का एक स्वरूप 'राम-राम' भी कहा जाता है। ऐसा क्यों इसके पीछे भी एक वैज्ञानिक कारण है। जितनी भी परम्पराएँ, रीति रिवाज, १६ संस्कार हमारे सत्य सनातन धर्म में बनाए गए हैं उन सब के पीछे वैज्ञानिक कारण उपलब्ध है। हमारे ऋषि मुनि बहुत ही दूर दृष्टा थे। उन्होंने आस्था और विश्वास को वैज्ञानिकता को धर्म के साथ जोड़ दिया ताकि लोग इनका प्रयोग करने में थोड़ा-सा भय भी समझे ताकि यह धर्म उन्हें हर प्रकार के विकारों से दूर रखे। और रामायण में भी कहा गया है कि 'भय विन होय न प्रीति।'

रामचरितमानस के कुछ अद्वितीय उदाहरण -

श्री रामचरित मानस में शिव भक्त श्री रावण के मन की बात जो उन्होंने न केवल स्वयं के मोक्ष के लिए सोची अपितु सारी राक्षस जाति के शुभ कल्याण के लिए भी इस पर विचार किया। यथा

सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा॥

तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ॥

भावार्थ - रावण ने विचार किया कि देवताओं को आनंद देने वाले और पृथ्वी का भार हरण करने वाले भगवान ने ही यदि अवतार लिया है, तो मैं जाकर उनसे हठपूर्वक वैर करूँगा और प्रभु के बाण (के आघात) से प्राण छोड़कर भवसागर से तर जाऊँगा॥

मानस प्रेमी ही जान पायेंगे कि तुलसीदास जी ने कितना परिश्रम किया होगा, इस प्रस्तुति को संकलित करने में, हम कलयुगी जीव केवल इन्हें पढ़कर ही अपना जीवन सफल कर सकते हैं क्योंकि इन सब में "राम" है और जहाँ "राम" हैं वहाँ प्रेम है, भक्ति है, समर्पण है, विश्वास है, श्रद्धा है, त्याग है, मर्यादा है, करुणा है, और जब

इतने सकारात्मक गुण हमारे जीवन में एक साथ आ जाते हैं तो फिर वह जीवन वास्तव में ही सार्थक हो जाता है क्योंकि इन सब का किसी के भी जीवन में आना एक विशुद्ध चरित्र को जन्म देता है, यानी किसी भी मनुष्य के जीवन में यह सब गुण जब आ जाते हैं तो वह चरित्र निश्चल, विनम्र, और विशुद्ध, आत्मीय तथा प्रभु के सामीप्य को प्राप्त करने वाला हो जाता है, और कहते भी है ना 'राम से बड़ा राम का नाम' और जहाँ "राम" हैं वहाँ सब कुछ है। इसलिए यदि इन चौपाइयों के अर्थ हमें ना भी समझ में आए तो केवल पढ़ने भर से हमारे जीवन का उद्धार सम्भव है; आवश्यकता है तो केवल विश्वास की, आस्था की, भक्ति की, प्रेम की और समर्पण की।

रामचरितमानस की चौपाइयों में ऐसी क्षमता है कि इन चौपाइयों के जप से ही मनुष्य बड़े-से-बड़े संकट में भी मुक्त हो जाता है। जितना सरल राम का नाम है उतना ही सरल उनका भजन है उनका स्मरण है। इन मंत्रों का जीवन में प्रयोग करने से जीवन में हर प्रकार से सुख-समृद्धि आती ही है। इसमें कोई भी संशय नहीं है क्योंकि "राम" का नाम सर्वकालिक है।

१. रक्षा के लिए - मामभिरक्षक रघुकुल नायक। घृत वर चाप रुचिर कर सायक ॥
२. विपत्ति दूर करने के लिए - राजिव नयन धरे धनु सायक। भक्त विपत्ति भंजन सुखदायक ॥
३. सहायता के लिए - मोरे हित हरि सम नहि कोऊ। एहि अवसर सहाय सोई होऊ ॥
४. सब काम बनाने के लिए - वंदौ बाल रूप सोई रामू। सब सिद्धि सुलभ जपत जोहि नामू ॥
५. वश में करने के लिए - सुमिर पवन सुत पावन नामू। अपने वश कर राखे राम ॥
६. संकट से बचने के लिए - दीन दयालु विरद संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
७. विघ्न विनाश के लिए - सकल विघ्न व्यापहि नहि तेही। राम सुकृपा बिलोकहि जेहि ॥
८. रोग विनाश के लिए - राम कृपा नाशहि सब रोगा। जो यहि भाँति बनहि संयोगा ॥
९. ज्वार ताप दूर करने के लिए - दैहिक दैविक भोतिक तापा। राम राज्य नहि काहुहि व्यापा ॥
१०. दुःख नाश के लिए - राम भक्ति मणि उस बस जाके। दुःख लवलेस न सपनेहु ताके ॥
११. खोई चीज पाने के लिए - गई बहोरि गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
१२. अनुराग बढ़ाने के लिए - सीता राम चरण रत मोरे। अनुदिन बढे अनुग्रह तोरे ॥
१३. घर में सुख लाने के लिए - जै सकाम नर सुनहि जे गावहि। सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहि ॥
- १४ सुधार करने के लिए - मोहि सुधारहि सोई सब भाँती। जासु कृपा नहि कृपा अघाती ॥
१५. विद्या पाने के लिए - गुरु गृह पढन गए रघुराई। अल्प काल विधा सब आई ॥
१६. सरस्वती निवास के लिए - जेहि पर कृपा करहि जन जानी। कवि उर अजिर नचावहि बानी ॥
१७. निर्मल बुद्धि के लिए - ताके युग पद कमल मनाऊँ। जासु कृपा निर्मल मति पाऊँ ॥
१८. मोह नाश के लिए - होय विवेक मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरण अनुरागा ॥
१९. प्रेम बढ़ाने के लिए - सब नर करहि परस्पर प्रीति। चलत स्वधर्म कीरत श्रुति रीति ॥
२०. प्रीति बढ़ाने के लिए - बैर न कर काह सन कोई। जासन बैर प्रीति कर सोई ॥
२१. सुख प्रप्ति के लिए - अनुजन संयुत भोजन करही। देखि सकल जननी सुख भरही ॥

२२. भाई का प्रेम पाने के लिए - सेवाहि सानुकूल सब भाई । राम चरण रति अति अधिकारी ॥
२३. बैर दूर करने के लिए - बैर न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विषमता खोई ॥
२४. मेल कराने के लिए - गरल सुधा रिपु करही मिलाई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥
२५. शत्रु नाश के लिए - जाके सुमिरन ते रिपु नासा । नाम शत्रुघ्न वेद प्रकाशा ॥
२६. रोजगार पाने के लिए - विश्व भरण पोषण करि जोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥
२७. इच्छा पूरी करने के लिए - राम सदा सेवक रूचि राखी । वेद पुराण साधु सुर साखी ॥
२८. पाप विनाश के लिए - पापी जाकर नाम सुमिरहीं । अति अपार भव भवसागर तरहीं ॥
२९. अल्प मृत्यु न होने के लिए - अल्प मृत्यु नहि कबजिहूँ पीरा । सब सुन्दर सब निरुज शरीरा ॥
३०. दरिद्रता दूर के लिए - नहि दरिद्र कोऊ दुःखी न दीना । नहि कोऊ अबुध न लक्षण हीना ।
३१. प्रभु दर्शन पाने के लिए - अतिशय प्रीति देख रघुवीरा । प्रकटे हृदय हरण भव पीरा ॥
३२. शोक दूर करने के लिए - नयन बन्त रघुपतहिँ बिलोकी । आए जन्म फल होहिँ विशोकी ॥
३३. क्षमा माँगने के लिए - अनुचित बहुत कहहूँ अज्ञाता । क्षमहूँ क्षमा मन्दिर दोऊ भ्राता ॥

श्री राम कथा अद्भुत है, अनोखी है, सुंदर है, रसिक है । इसके बारे में किसी कवि ने निम्न पंक्तियाँ कही हैं जो सर्वथा उचित जान पड़ती हैं -

ये है राम कथा, ये है राम कथा, इसे पढ़ कर मिट जाती है, जीवन की हर व्यथा, ये है राम कथा, ये है राम कथा । श्री रामचरितमानस और नीति शिक्षा - तुलसीदासजी द्वारा रचित रामचरित मानस नीति-शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें बताई गई कई बातें और नीतियाँ मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी मानी जाती हैं, जिनका पालन करके मनुष्य कई दुःखों और परेशानियों से बच सकता है।

रामचरित मानस में चार ऐसी महिलाओं के बारे में बताया गया है, जिनका सम्मान हर हाल में करना ही चाहिए। इन चार का अपमान करने वाले या इन पर बुरी नज़र डालने वाले मनुष्य महापापी होते हैं। ऐसे मनुष्य को जीवनभर किसी न किसी तरह से दुख भोगने पड़ते ही हैं - "अनुज बधू भगिनी सुत नारी, सुनु सठ कन्या सम ए चारी, इन्हिह कुदृष्टि बिलोकइ जोई, ताहि बधेँ कछु पाप न होई॥" अर्थात् - छोटे भाई की पत्नी, बहन, पुत्र की पत्नी और अपनी पुत्री - ये चारों एक समान होती हैं। इन पर बुरी नज़र डालने वाले या इनका सम्मान न करने वाले को मारने से कोई पाप नहीं लगता।

वास्तव में रामचरितमानस में कोई भी उक्ति ऐसी नहीं है, कोई भी चौपाई ऐसी नहीं है जिसमें कोई शिक्षा ना हो। केवल आवश्यकता है तो हमें इनका अनुकरण करने की।

"हमें निज धर्म पर चलना सिखाती रोज रामायण, सदा शुभ आचरण करना सिखाती रोज रामायण ।

जिन्हें संसार सागर से उतरकर पार जाना है, उन्हें सुख से किनारे पर लगाती रोज रामायण।

कहीं छवि विष्णु की बाँकी, कहीं शंकर की है झाँकी, हृदयानंद झूले पर झूलाती रोज रामायण ।

सरल कविता की कुंजों में बना मंदिर है हिंदी का, जहाँ प्रभु प्रेम का दर्शन कराती रोज रामायण।

कभी वेदों के सागर में, कभी गीता की गंगा में, सभी रस बिंदुओं को मन में मिलाती रोज रामायण।

कहीं त्याग, कहीं प्रेम, कहीं समर्पण का भाव है, भक्ति, प्रेम का संदेश जन-जन को पहुँचाती रोज रामायण।

सत्य, निष्ठा, मर्यादा का अनुपम संदेश है ये, भारत की गरिमा में चार चाँद लगाती रोज रामायण ।"

यह भी कहा जाता है कि जिन हिंदू परिवारों में रामचरितमानस की चौपाई के स्वर नहीं होते उन घरों में राग, शोक, दुख, दरिद्रता व क्लेश सदैव चारपाई बिछाए स्थाई रूप से निवास करते हैं। अतः श्री रामचरितमानस का पाठ अत्यंत कल्याणकारी है। इसे हमे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।

निष्कर्ष: - निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि श्रीरामचरितमानस एक ऐसा महाकाव्य है जो प्रत्येक भारतीय के हृदय में बसा है। इसके नियम, मूल्य, मान्यताएँ, रीति-रिवाज हमारी रक्त धारा के साथ मिलकर हमारे शरीर में अनवरत चलाएमान है, गतिमान है, और जो रक्त धारा है, वह जीवनदायिनी शक्ति है, आधार है वह तो बहुमूल्य होगी ही।

श्री रामचरितमानस के बिना भारत की पहचान सम्भव नहीं हो सकती। यह सर्वसाधारण भारतीय का अपना महाकाव्य है क्योंकि - "सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुण गान, सादर सुनहिं ते तरही भव, सिंधु बिना जल जान"। (सुंदरकांड, दोहा- ६०) अर्थात् रघुनायक श्री राम जी का गुणगान अति मंगलकारी है जो नर इसे आदर के साथ सुनते हैं, इस संसार सागर से पार उतर जाते हैं।

रामचरितमानस एक वृहद ग्रंथ है। इसको शब्द सीमा में बाँधना असम्भव कृत्य है क्योंकि स्वयं देवताओं ने भी जिसके बारे में नेति-नेति कहा हो, तो हम जैसे अल्प बुद्धि व्यक्ति इसका वर्णन करने में कैसे समर्थ हो सकते हैं। इसका कथानक, इसकी विशालता, इसकी विविधता को समझ पाना हमारे बस का काम नहीं है। फिर भी एक तुच्छ प्रयास है क्योंकि "जाति पाती पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।"

अतः हमने भी भक्ति भावना को समाहित करते हुए श्री रामचरितमानस के ऊपर अपने विचार व्यक्त किए हैं क्योंकि यह प्राकृतिक है कि जहाँ श्री रामचरितमानस का नाम होगा वहाँ भक्ति अवश्य होगी।

अतः अंत में बस यही कहना चाहूँगी कि श्रीरामचरितमानस का जो स्थान भारतवर्ष में है या पूरे विश्व में है वो ऐसे ही आदरणीय बना रहे, और आगे भी यह ग्रंथ हमारे आने वाली पीढ़ियों के लिए भक्ति, संस्कार, चेतना, नैतिकता, मानवीय मूल्यों का संरक्षण, संवर्धन करता रहे, इसी मंगल कामना के साथ, "जय श्री राम।"



कलियुग का माँग-पत्र

मणिन्दर कुमार सिंह

मैंने देखा..

पृथ्वी टिकी हुई थी
उन्हीं दो दानों की धुरी पर
और दानें जुड़े हुए थे उसके केंद्र से

मैंने सुनी थी बातें उनकी
खेत की मेड़ों पर चलते हुए
अनगिनत दानों के बीच
बोल रहे थे सिर्फ दो दाने गेहूँ के

जो शीत के नीचे भी पक रहे थे
और शक्ति इतनी
कि
खींच लेते थे सूर्य की पीली ताप को भी

सुना मैंने कि वे बोल रहे थे
किसी मृतक दाने के बारे में
जो धूप में खड़े-खड़े
गिर पड़ा था बेहोश होकर
और अब मर जाने की प्रक्रिया में था

उन दानों को डर था कि
बाकी के दाने भी कहीं दम न तोड़ दे





देखा-देखी एक दूसरे के
मरे दाने भूख हड़ताल पर चले गए तो!

शायद वो माँग रहे थे हवा, पानी और खाद
साथ ही वह आजादी भी
जो मिल गई थी बाकियों को
किसान ने वादा किया था देने का
उन्हें अपने मेनुफेस्टो में

मैं डर गया और तेज हो गई मेरी चाल और धड़कन भी
कुछ दूर चलने पर मुझे मिला चींटियों का एक जुलूस
जो नारे लगा रहा था
'आवाज दो हम एक हैं'.

उनकी माँग थी कि उन्हें मिल जाए उनके हिस्से की मिट्टी
और एक अदद नौकरी
तथा लाइन में चलने का अधिकार भी

इधर कोई दे रहा था ज्ञापन
किसी उच्चाधिकारी को
कि आज किसी सक्षम अधिकारी ने खा लिया है
मछलियों के हिस्से का चारा

तमाम केंचुए निकल आए थे
फोटो खिंचवाने के लिए
क्योंकि यही अखबार में आने वाला था कल
और छपने वाला था 'कलियुग का माँग-पत्र'

एक मुलाकात

उषा राजे सक्सेना

मेरी उस उदास और ज़र्द चेहरेवाली औरत से कभी मुलाकात नहीं होती, अगर मुझे वातानुकूलित डिब्बे में आरक्षण मिल गया होता. उससे मिलना महज़ एक इत्तेफ़ाक था. हुआ यूँ कि मैं अपने एक सहपाठी के लड़के की शादी में सिकंदराबाद गई थी. शादी २१ दिसम्बर की थी और मुझे हर हालत में अपनी किताब को छपवाने के लिए प्रकाशक से मिलने के लिए २५ दिसम्बर को दिल्ली में होना ज़रूरी था. मेरे दोस्त की ज़िद थी कि मैं शादी में शिरक़त ज़रूर करूँ. आखिर वह मेरा सहपाठी है और यह उसके पहले लड़के की शादी है. उसने मुझसे वायदा किया कि वह मुझे हर हालत में २५ दिसम्बर को दिल्ली पहुँचवा देगा क्योंकि सिकंदराबाद में उसका बहुत रसूख है. खैर मेरे पास कोई चारा नहीं था मैं शादी के लिए रुक गई.

लौटते वक़्त, समय की क़मी की वजह से वह मेरा आरक्षण नहीं करवा सका और उसने मुझे औरतों वाले डिब्बे में घुसा दिया. जिसमें बेहद भीड़ थी. मेरा सहपाठी बहुत शर्मिदा था कि अपने वायदे के मुताबिक वह मेरा सही इंतज़ाम नहीं करवा सका. मैं भी मन ही मन उससे नाराज़ थी. वह औरत जिसका जिक्र मैं ऊपर कर चुकी हूँ, सामनेवाली सीट पर दो बच्चों के साथ बैठी हुई थी. उसकी उम्र यही कोई बीस-बाइस वर्ष की रही होगी. एक बच्ची गोद में थी. दूसरी चौदह महीने की और तीसरी पेट में. उदास और मासूम चेहरा लिए कभी वह एक बच्ची को सँभालती कभी दूसरी को. जल्दी ही रेल में सफ़र कर रही दूसरी औरतों ने गोदवाली बच्ची को सँभालना शुरू कर दिया, और वह चौदह महीनेवाली बच्ची को सँभालती रही जो बेहद नटखट दीख रही थी.

डिब्बे में लोग ज़रूरत से ज़्यादा थे. बैठने तक की जगह नहीं थीं. मैं लंदन से दशकों बाद भारत तीन सप्ताह के लिए आई थी. ज़हन में लंदन का साफ़सुथरा और संयमित वातावरण पसरा हुआ था. मेरे एस्थेटिक सेन्स को गहरा धक्का लगा. अनेक भारतीय पारिवारिक और सामाजिक रीत-रिवाज़ तथा बेवक़्त के चहल-पहल दिमाग़ से उतर गए थे. मैं दुःखी थी. क्षुब्ध थी. छली हुई महसूस कर रही थी. इसलिए न किसी की तरफ देखा और न किसी से बात की. मैंने एक किताब निकाली और उसे पढ़ना शुरू कर दिया. नया-नया लिखने का मर्ज़ लगा था इसलिए बीच-बीच में एक आध पंक्तियाँ भी लिख लेती थी. फिर मेरी किताब जो छपने के लिए प्रकाशक के पास जानी थी उसकी पाँडुलिपि भी मेरे साथ थी. अतः उसको भी पढ़ती और कुछ सुधार लेती.

यूँ भी मेरी फ़ितरत रूमानी है. ज़िंदगी की सच्चाइयों से मैं ज़्यादा वास्ता नहीं रख पाती हूँ. अक्सर यह होता है कि जहाँ मैं होती हूँ वहाँ नहीं होती हूँ. जहाँ मैं नहीं होती हूँ वहाँ होती हूँ. मैं बँद आँख भी सपने देखती हूँ और खुली आँख भी. ज़ाहिर था कि मुझे उन लोगो में कोई दिलचस्पी नहीं थी. उन लोगो ने जल्दी ही जान लिया कि मैं उन लोगो में से नहीं हूँ. मैं अलग किस्म की हूँ.

उन्हें मेरे आराम का खयाल होने लगा. उदास और ज़र्द चेहरेवाली बाइस साला औरत ने मुझसे पूछा 'क्या आपको बहुत दूर जाना है?' मैं तमाम शोर-गुल्ल और भीड़ से खीझी हुई थी. रूखा और छोटा सा जवाब दिया, 'दिल्ली जाना है.' और अपनी किताबों में मशगूल हो गई. थोड़ी देर वह मुझे देखती रही. मैंने उसकी निगाह की गर्मी को अपने ऊपर महसूस किया. उसने अपनी साथ वाली दूसरी औरत से कुछ कहा, और जल्दी ही मेरे लिए आराम से खिड़की के पास बैठने के लिए जगह बन गई. मुझे ताज़ुब हो रहा था कि उसे क्यूँ मेरी फ़िक्र हो रही थी. उस औरत ने मेरा सामान देखा. मेरे पास सिवाए ओवर-नाइट बैग के और कुछ न था. यहाँ तक कि चौबिस घंटों की यात्रा और खाने का कोई भी सामान साथ नहीं.

मुझे खाने की बहुत आदत नहीं है. फिर हमेशा ए.सी. में यात्रा करने की आदत बन चुकी थी इसलिए सामान लेकर चलने की आदत भी नहीं रही.

आज जब साधारण दर्जे में बैठी तब समझ में आया कि बिस्तरबंद, बक्से, डलिए, पोटलियाँ आदि यात्रा के लिए बेहद जरूरी हैं। सोचा मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। चौबिस घंटे कैसे कटेंगे? किताबों को न बिछा सकती थी, न ओढ़ सकती थी, न खा सकती थी, और न पी सकती थी। दिसम्बर का महीना, खिड़कियों से आती ठंडी तेज़ हवा मेरे जिस्म पर नुकीली बर्छियाँ चला रही थी।

जल्दी ही उस उदास और ज़र्द चेहरेवाली औरत ने मेरी तमाम परेशानियों को भाँप लिया। सिर्फ़ उस औरत ने ही क्यों? उस डब्बे की तमाम औरतों ने जो खुद तकलीफ़ में थीं, बेबस थीं, जिन्हें खुद आराम की ज़रूरत थी, उन्हें मेरे आराम की फ़िक्र ने बेचैन कर दिया।

रात होने से पहले उन लोगों ने न सिर्फ़ मेरे बैठने की बल्कि ऊपर के बर्थ से सामान हटा कर मेरे सोने की व्यवस्था भी कर दी। मुझे लगा कि यह लोग मुझे खास नज़रों से देख रहे हैं और मेरे आराम का खास खयाल रख रहे हैं। क्यों? मैंने अपने एकमात्र बैग को और पास सरका लिया।

उन लोगो ने मेरे खाने के बारे में पूछा, मैंने उनसे कहा, 'मैं सफ़र में कुछ भी नहीं खाती हूँ।' कई लोगों ने मुझे अपने हिस्से की पूरी, परांठे, अचार आदि पेश किए। पर मैंने मना कर दिया। उनके चेहरे उतर गए। मुझे लगा कि मैंने कुछ गलत कर दिया। जल्दी ही मैंने उनसे माफ़ी माँगते हुए कहा, 'बात दरअसल यह है कि मेरा हाज़मा कुछ ठीक नहीं है और अगर मैं सफ़र में कुछ खा लूँ तो मेरा पेट खराब हो जाता है।' उन्होंने मुझे पानी दिया, मैं वह भी नहीं पी सकी। दरअसल वे लोग मुझे गंदे, अनपढ़ और गँवार लगे। मुझे उनकी सफ़ाई के आदतों पर शक़ था। वैसे भी मुझे हिंदुस्तान की गंदगी और फूहड़पन पर मितली आती है।

सामने सीट पर बैठी उदास और ज़र्द चेहरेवाली बाइस-साला औरत कुछ न बोली, सिर्फ़ बीच-बीच में मुझे ग़ौर से देखती जाती। मुझे उससे कुछ उत्सियत कुछ बेचैनी दोनों महसूस होने लगी। उसके दोनों बच्चे लोगो से घुल-मिल गए थे। अब यह पता लगाना मुश्किल हो गया था कि वे किसके बच्चे हैं। वह औरत बच्चों की तरफ़ से बिलकुल बेफ़िक्र नज़र आ रही थी। कई बार तो मुझे ख़ौफ़-सा महसूस हुआ कि कहीं रात के अँधेरे में वह दुखिया बच्चों को लोगो के पास छोड़कर, खुद चुपचाप गुम न हो जाए। बहरहाल उसकी तरफ़ से ध्यान हटा कर मैं इंतज़ार करने लगी कि जल्दी से दिल्ली आ जाए और मैं अपनी मोटरगाड़ी में बैठकर अपने घर चली जाऊँ, पर अभी तो पूरी रात और आधा दिन बाक़ी था। अब मुझे कुछ भूख़ सी लग आई।

पता नहीं उस औरत को कैसे पता चल गया। नागपुर आते ही उसने मेरे लिए दो दर्जन संतरे, आधा दर्जन केले और एक बिस्लरी की बोतल मँगा दी।

धीरे-धीरे उन लोगो का शोर गुल, भीड़ भड़क्का, पसीने की बदबू, बिस्तरबंद, झोले, गठरियाँ आदि मेरी आँखों से ओझल होने लगे। मुझे उनमें एक खास खुशबू और क़दीमी इख़लाक़ नज़र आने लगा। मुझे खुद पर ताज्जुब होने लगा। मुझे लगा वे लोग इतने बुरे नहीं हैं जितने शुरू में लगे थे। मुझे महसूस हुआ इन गंदे लोगो में भी एक तरह की सफ़ाई है। भीड़ उनकी मजबूरी है पर उसमें भी एक अदब है, एक तरतीब है जिसमें छोटे-बड़े, भाई-चारे और इंसानियत की खुशबू है। वे हमें उज्जड़ गँवार नज़र आते हैं पर हैं ये मोम के पुतले। इनके अन्दर एक पवित्रता है जो इनके अन्दर के इंसान को महफूज़ रखती है। अब मुझे वहाँ, उनके बीच बैठना अच्छा लगने लगा। मैंने उन लोगो को ग़ौर से देखना शुरू किया।

भूख़ से उनके चेहरे निचुड़े हुए थे। उनके बदन पर माँस बहुत कम था। ग़रीबी की वजह से उनके कपड़े बदरंग और मटमैले थे। उनकी बोली में विनम्र दासता थी, पर उनमें एक अदृश्य सहयोग था। आपस में जुड़े रहने की क़शिश थी। डिब्बे में जगह न होने पर भी, हर नए आनेवाले के लिए जगह बन जाती। छोटे बच्चों के लिए गोद हमेशा तैयार रहती। वे लोग मुझे ज़मीन के लोग लगे, जो सदियों से कुचले हुए थे पर उठे हुए थे। ये वे लोग थे जिनके पास ज़मीर की चुभन थी। जिनकी जेबें फटी हुई थीं पर उनमें पैबंद लगने की गुँजाइश थी। मुझे आश्चर्य

हो रहा था कि मैं यह सब पहले क्यों न देख सकी. मैंने अपना चश्मा उतारा, साफ़ किया और फिर से लगा लिया.

सामने सीट पर बैठी बाइससाला ज़र्द उदास चेहरे वाली औरत ने मुझे फिर ग़ौर से देखा, मुझे उसका ज़र्द चेहरा और उदास लगा. जल्दी ही मैंने उस पर से नज़र हटा ली. मुझे उससे अजीब सी हमदर्दी होने लगी थी. मुझे लगा वह औरत मुझे अंदर तक पढ़ चुकी है. और अब वह मेरे ज़हन में सीधा उतरती चली जा रही है. तभी उसने कहा, 'रात काफी हो चुकी है आप सो जाएँ. हम दरवाजे पर कुँडी लगा देंगे अब चार बजे तक गाड़ी कहीं और नहीं रुकेगी. यूँ भी सारा दिन आप लिखती और पढ़ती रहीं हैं. आपको नींद की सख्त ज़रूरत है.' मैंने अपने ओवरलाइट बैग को हिफ़ाज़त से सिर के नीचे रखा और सोने की कोशिश करने लगी, उस थोड़ी सी जगह में जो अब बड़ी आरामदेह लगने लगी थी. चारों तरफ़ नजर घुमाया सभी सो या उँघ रहे थे.

मैं सारे माहौल से ख़बरदार बर्थ पर लेटी, अधखुली आँखों से उस ज़र्द चेहरेवाली उदास औरत को देख रही थी. मुझे लगा उसका मासूम, उदास और ज़र्द चेहरा और भी ज़र्द होता जा रहा है. वह सामने सीट पर ख़ामोश बैठी थी और मैं उसे देख रही थी. धीरे-धीरे सपने मुझ पर हावी होने लगे. उसकी शक्ल धीरे धीरे मोनालिसा में तब्दील होने लगी और सारी दुनिया की मजलूम औरतों की करुणा उसके चेहरे में भरने लगी. उसकी शबनमी आँखें झरने बन गईं, जिनमें से आँसू जल प्रपात से बहने लगे और उनमें से छिटकी बूँदें मुझे भिगोने लगी. फिर उस औरत का जिस्म समंदर बन गया, जिसमें उसका मासूम ज़र्द और उदास चेहरा डूबने और उतराने लगा.

मैं समंदर के किनारे जोर-जोर से हाथ हिला-हिला कर चिल्ला रही थी, 'मुझे तैरना नहीं आता है, मैं तुम्हें बचा नहीं सकती हूँ...पर तुम डूब नहीं सकती हो. कोशिश करो, हाथ पाँव मारो. कोई सहारा खोजो....डूबो मत.'

हवा तेज़ चल रही थी. समंदर गरज रहा था. काले बादलों से बारिश की तेज़ धार समन्दर में भयानक लहरों का तूफ़ान खड़ा कर रही थी. लहरों के थपेड़ों और शोर में मेरी रूँधी हुई आवाज़ गुम हुई जा रही थी. मेरी पुकार किसी तरह उस तक नहीं पहुँच पा रही थी. मैं बहुत बेबस महसूस कर रही थी. मैं सर पर हाथ फेरते हुए अपने कटे बालों को कोस रही थी. काश! मेरे बाल रपंज़ल की लम्बी चोटियों की तरह गुथे होते तो मैं उन्हें समंदर में फेक देती और वह उसे रस्से की तरह पकड़कर बाहर चली आती. मेरे पास उस मजलूम औरत को बचाने का कोई तरीका नहीं था. समन्दर में उठते हुए सैलाब में वह डूब रही थी. मेरा दिल कह रहा था कि अगर मैं उसे बचा नहीं सकती तो मुझे भी डूब जाना चाहिए.

ज़र्द और उदास चेहरे वाली वह औरत डूब रही थी फिर भी उसने मेरे ख़यालों को पढ़ लिया. तूफ़ानी लहरों ने जब उसे ऊपर की ओर फेंका तो वह जोर से चिल्लाई, 'तुम अपने को बचा लो. तुम डूबना मत. तुम भाग जाओ. तुम्हारे पीछे ज़मीन है. मुझे डूबने दो. मैं बच नहीं सकती. मेरे फेफड़ों में पानी भर चुका है. तुम...तुम खुद को बचा लो...और...बाक़ी लोगो को भी बचाने की कोशिश करना.' और सैलाब उसे बहा ले गया. मैं खड़ी देखती रही.

मेरी आँख खुल गई. मैंने जल्दी से सामनेवाली सीट पर देखा. वह औरत अभी भी उसी तरह बैठी थी. फ़र्क सिर्फ़ इतना था कि डिब्बा खाली हो चुका था. बाक़ी औरतें अपने अपने मुक़ाम पर उतर चुकी थीं. चौदह महीने वाली बच्ची उसके बग़ल में सीट पर सोई हुई थी. छोटी उसकी गोद में खेलते हुए दूध पी रही थी. उसके मासूम उदास ज़र्द चेहरे पर टकी खूबसूरत शबनमी आँखें नम थीं. वह रात भर सोई नहीं थी. उसकी आँखों में लाल रेशे उभर आए थे. पपोटे फूले हुए थे.

मैं उसे अपनी बाहों में भर कर कहना चाहती थी, 'देखो तुम डूबना मत. मैं तुम्हें बचा लूँगी...' कि उसके खूबसूरत होंठ काँपे और उसने बासुरी सी सुरीली आवाज़ में कहा, 'आप अदीब हैं. आप औरतों के बारे में लिखें. उनकी मजबूरियों के बारे में लिखें....'

मैं कुछ कहना चाह रही थी कि गाड़ी रुक गई. मूँछे उमेठता, तहमद पहने एक मगरूर किस्म का आदमी उसे लेने आया और वह सिकुड़ती सिमटती ज़र्द और उदास चेहरे के साथ दोनों बच्चों को सँभालती हुई उसके साथ घिसटती हुई चलने की तैयारी करने लगी. मैंने फुर्ती के साथ पर्स में से अपना कार्ड निकाला और उसकी हथेली में दबा दिया, फिर उसके कान में फुसफुसाई, 'मुश्किलों में मुझे याद करना, मुझ पर ऐतबार करना.' मुझे अपने ऊपर हैरत हुई, मैं कबसे इतनी संवेदनशील हो गई.

वह मोनालिसा जब-तब मेरे ज़हन पर छा जाती है. मैंने जल्दी ही देश में अपना ज़रूरी काम खत्म किया और दिल्ली से लंदन चली आई. लंदन की गहमा-गहमी और व्यस्त जीवन शैली शीघ्र ही मुझ पर हावी हो गई. एक तो ख़ाली वक़्त न मिलता और अगर मिलता तो नए-नए सपने बुनती. याददाश्त अच्छी न होने की वजह से देश की तमाम तलख़ यादें बिसर गईं. बस कभी-कभी तन्हाई में उस सोंधी मिट्टी की गंध मुझे ज़रूर बेचैन कर जाती. वह ज़र्द और उदास चेहरेवाली मोनालिसा और उसकी वे शबनमी आँखें ज़रूर कभी-कभी मेरी सपनीली आँखों से टकराती और मैं अपने अंदर एक अजीब सी बेचैनी महसूस करती.

कुछ ही दिनों बाद एक ख़त आया. उलट पलट कर देखा. पोस्ट मार्क मथुरा का था. किसी शबनम ने लिखा था. आश्चर्य-सा हुआ, मैं तो किसी शबनम को नहीं जानती. लिखा था, 'बहन मुश्किलों में आपको याद कर रही हूँ. मुझे आपकी इंसानियत पर भरोसा है. जब तक यह ख़त आपको मिलेगा मैं खुदकुशी कर चुकी होऊँगी. मेरी गोद की बच्ची का गला मेरे खाविद ने घोंट कर मार दिया क्योंकि उस मासूम की शक्ल उससे नहीं मिलती थी. मैं कुछ नहीं कर सकी. बड़ी बेटी को मैंने मुमानी के पास भेज दिया है. वे भी मजलूम हैं. पता लिख रही हूँ. आप जल्दी से उसे किसी यतीमख़ाने भेज दीजिए. जहाँ मेरा खाविद उसे न पा सके. मेरे पेट का बच्चा अल्लाह के दरबार में उससे फ़रियाद करेगा.'

मैं धक् से रह गई. मेरी मोनालिसा! आँसुओं का सैलाब मेरी आँखों में उमड़ आया. मैं मोनालिसा को नहीं बचा सकी. वह डूब गई.

अब वह बच्ची मेरी माँ के पास पल रही है. मैं उस बच्ची को अपने पास लंदन लाना चाहती हूँ. कानून दिन पर दिन सख़्त होते जा रहे हैं. मेरी रिहाइश हिंदुस्तान में अब नामुमकिन है पर मेरी भी ज़िद है उसे मैं लंदन ज़रूर ले आऊँगी. उसे मैं एक कामयाब इंसान बनाऊँगी. सपने देखना मेरी फितरत है और उस ज़र्द, उदास चेहरेवाली औरत शबनम ने मेरा वास्ता हकीक़त से करा दिया है. अब मैं हकीक़त के सपने देखती हूँ. बाज़वक़्त में इन सपनों को हकीक़त में तब्दील करने में इस क्रूर मसरूफ़ हो जाती हूँ कि लोग मुझे मगरूर, बेरुख़ और नीम पागल समझने लगते हैं.

ख़ैर मुझे इन बातों से कोई मतलब नहीं पर मैं इतना ज़रूर जानती हूँ कि ज़िंदगी बेहद कड़वी है और औरत की ज़िंदगी तो एक तरह से अभिशाप है. औरत बहुत मजबूर है.

मैं उस बच्ची को लंदन ज़रूर ले आऊँगी और उसके लिए दुनिया की हर लड़ाई लड़ूँगी. ज़र्द और उदास चेहरेवाली शबनम मेरी ज़िंदगी बदल गई, सपने देखने की मेरी फितरत को नया मोड़ दे गई.....



तस्वीर

रमेश चंद डढवाल

सूक्ष्म सम्बेदना को बाँध के रख सके,
वो अदृश्य नाजुक जंजीर देखते हैं।
नूतन पुरातन को याद कर रहा है,
आओ कोई पुरानी तस्वीर देखते हैं।

शब्द कह न पाएँ न कह सके इशारा,
न धड़कन न आहट न चेहरा हमारा।
कहें किस तरह से वो किस्सा-कहानी,
कहाँ से हम लायें वो मंजर दोबारा।
धरा-आसमाँ जिस जगह मिल रहे हैं,
उसे जोड़ती इक लकीर देखते हैं।
चेहरे की झुर्रियाँ आवाज दे रही हैं,
आओ कोई पुरानी तस्वीर देखते हैं।

धड़कन की लय पर नग़मे हैं गाये,
पलकों की छाँव घने गेसुओं के साये।
सपनों में परियाँ, जवाँ दिल था राँझा,
वो ख्वाबों की दुनिया दूर छोड़ आये।
सफर की निशानी, वो बीती कहानी,
थी जिसमें लिखी वो तकदीर देखते हैं,
कल्पना यथार्थ को याद कर रही है,
आओ कोई पुरानी तस्वीर देखते हैं।

निखरे चेहरा बदले गुण धर्म रक्त का,
होता रोमांच मिले मीत उस वक्रत का।
जलतरंग सी मधुर लय बदन में उठे,
थिरकें पाँव गायें गीत उस वक्रत का।
भावों के विस्तार में आकण्ठ डूब कर,
नयनों में छलकते अश्रु-नीर देखते हैं।
हृदय भाव विभोर हो नृत्य करने लगे,
आओ कोई पुरानी तस्वीर देखते हैं।

गाँधी जी का हिन्दी प्रेम

डॉ. गुलाब चंद पटेल

१९१८ में गाँधीजी ने हिंदी साहित्य सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए कहा था। हिंदी भाषा को जनहित की भाषा गाँधीजी ने बताया था।

१९४९ में स्वतंत्र भारत के प्रश्न पर १४ सितम्बर को हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने के विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया जो भारतीय संविधान के भाग १७ के अध्याय की धारा ३४३(९) में इस प्रकार हैं -

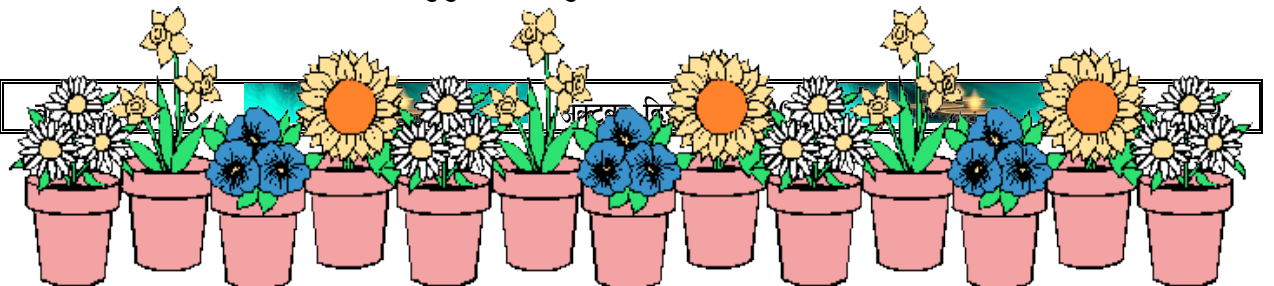
"संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, संघ व राजकीय प्रयत्नों के लिए प्रयोग होने वाले अंक का रूप अंतरराष्ट्रीय रूप होगा - यह निर्णय १४ सितम्बर को लिया गया इस कारण हिंदी दिवस के लिए इस दिन को श्रेष्ठ माना गया है। गैर हिंदी भाषी राज्य के लोग इसका विरोध करने लगे तो अँग्रेजी को भी राजभाषा का दर्जा देना पड़ा, इस कारण हिंदी में भी अँग्रेजी भाषा का प्रभाव पड़ने लगा।

हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर वर्ष १९५३ से भारत में १४ सितम्बर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी को भारत में राजभाषा के रूप में १४ सितम्बर सन १९४९ को स्वीकार किया गया। इस के बाद संविधान में अनुच्छेद ३४३ से ३५१ तक राजभाषा के सम्बंध में स्वीकार की गई। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिए १४ सितम्बर के दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय संविधान में राष्ट्र भाषा का उल्लेख नहीं है। संसद का कार्य हिंदी में या अँग्रेजी में किया जा सकता है, लेकिन राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में रुके गए सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को सम्बोधित करने की अनुमति दे सकते हैं (संविधान का अनुच्छेद १२०)।

स्वतंत्रता पूर्व गुजराती के महान कवि श्री नर्मद(१८३३-८६)ने हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए विचार रखा था। १८७२ आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कोलकाता में केशव चंद सेन से मिले तो उन्होंने स्वामी जी को यह सलाह दी कि आप संस्कृत को छोड़कर हिंदी बोलना आरम्भ कर दें, तो भारत का कल्याण हो सकता है। तभी से स्वामी जी के व्याख्यान की भाषा हिंदी हो गई और इसी कारण स्वामी जी ने सत्यार्थी प्रकाश की भाषा हिंदी ही रखी। सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज का आधार ग्रंथ है। १९१८ में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने काँग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी। १९१८ इंदौर में सम्पन्न आठवें हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गाँधी ने कहा कि, "मेरा यह मत है कि हिन्दी को हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा बन कर गौरव प्रदान हो। हिंदी सभी समझते हैं, इसे राजभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए। १९१८ में महात्मा गाँधी द्वारा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना हुई।

१८८६ में इंदिरा गाँधी ने राजभाषा पुरस्कार प्रारम्भ किया। १९८८ को संयुक्त राज जनरल एसेम्बली के तत्कालीन विदेश मंत्री श्री नरसिंह राव हिंदी में बोले थे। १४/०९/१९९९ संघ की राजभाषा हिन्दी की स्वर्ण जयंती मनाई गई। मई २०१८ में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने हिंदी माध्यम से इंजीनियरिंग की शिक्षा की अनुमति दी। १७ जुलाई २०१९ में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने सभी निर्णय हिंदी में और अन्य असमिया, कन्नड, मराठी, ओडिया, तेलुगु में भी अनुवाद किया गया!



मिलन कैसे हो हमारा

विजया गुप्ता

मैं धरा हरी, तुम अम्बर नीला
हैं दूर बहुत, नहीं हैं पास
मिलन कैसे हो हमारा ?

मैं नयनों की सेज
तुम स्वप्न संसृति
आओ हमारे द्वार
मिलन ऐसे हो हमारा.

मैं सुरों की सरगम
तुम रागों की धड़कन
छेड़ो सप्तक तार
मिलन ऐसे हो हमारा.

मैं ताल कुमुदिनी
तुम चंद्र किरण
खिलाओ बारम्बार
मिलन ऐसे हो हमारा.

मैं तरंगित सागर
तुम पूनम का चाँद
उर में उठाओ ज्वार
मिलन ऐसे हो हमारा.

मैं शुभ्र चंद्रिका
तुम उन्मत्त चकोर
चुगो मयूख अंगार
मिलन ऐसे हो हमारा.

मैं तप्त सिकता कण
तुम हो मेघ सघन
बरसो बन जलधार
मिलन ऐसे हो हमारा.

तुम स्वयं दीपक बनो !

प्रो. गिरीश्वर मिश्र

(पूर्व कुलपति महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय)

दीपावली पर्व के अवसर पर भाँति-भाँति के प्रकाश के आयोजन बड़े ही धूम-धाम से किए जाते हैं। भारतीय पंचांग के हिसाब से कृष्ण पक्ष की अमावास्या यानी गहन अंधकार भरी काली रात में दीपावली मनाई जाती है। वैसे भी अँधेरा होने पर ही हमें प्रकाश की जरूरत महसूस होती है। तब हम प्रकाश का आवाहन करते हैं। वैसे जब भी कोई पूजा-अर्चना होती है तो प्रकाश की उपस्थिति अनिवार्य है। प्रत्येक देव-पूजा में भी दीप जलाते हैं और पूजा सम्पन्न होने पर आरती भी की जाती है। प्रकाश और ज्ञान के बीच का भी गहरा रिश्ता है। दीप का अर्थ यह भी समझ में आता है कि भ्रमों को हटाते हुए स्वयं को आलोकित करो। सद्गुण का प्रकाश ही जगत को आलोकित करता है। आखिर अहंकार (के अंधकार) से मुक्त हो कर ही ज्ञान की राह बनती है। ज्ञान की तात्कालिक परिणति भी 'विनय' है जिससे पात्रता आती है। जो भी हो, प्रकाश के प्रति भारतीय मानस की गहरी आस्था रही है। धीरे-धीरे प्रकाश सभ्य सुसंस्कृत होने की हमारी व्यवस्था का हिस्सा बन गया। मूल्य के रूप में वैदिक काल से ही अंधकार से प्रकाश की ओर आगे बढ़ने की कामना की जाती रही है।

कहा जाता है कि राजा राम के अयोध्या आगमन के अवसर पर नगरजनों ने स्वागत दीप जलाए और तभी से दीपावली की परम्परा शुरू हुई थी। पिछले साल से उत्तर प्रदेश की सरकार ने अयोध्या में दीपावली का बड़े पैमाने पर आयोजन शुरू किया है .. इस वर्ष सरयू तट पर तीन लाख से ज्यादा दीये जलाए गए और 'फैजाबाद' के नाम से दर्ज अयोध्या को फिर 'अयोध्या' नाम दे दिया गया। आयोजन का आकर्षण पुष्पक विमान (हेलीकॉप्टर) से रामावतरण और राम राज्याभिषेक की लीला का आयोजन था। इस अवसर पर आकाश से पुष्पवृष्टि भी हुई। दक्षिण कोरिया की प्रथम महिला किम जुंग सुक का सान्निध्य भी मिला जिसे प्राचीन काल में घटित अयोध्या की राजकुमारी की कोरिया के राजकुमार के साथ विवाह की घटना के साथ जोड़ कर देखा गया। यह पूरा कार्यक्रम बड़ा ही भव्य था, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अनुरूप। यह अलग बात है कि सियासी हल्के इस आयोजन का राजनैतिक आशय देख रहे हैं। वैसे भी राम मर्यादा की याद दिलाते हैं और जनकल्याण के आगे सब कुछ त्याग देने को तैयार रहते हैं। राजनीतिज्ञों को इसे भी ध्यान में रखना चाहिए। प्रतिमा में छवि सुरक्षित करने से अधिक ज़रूरी है जनकल्याण की मुहिम।

दिये के स्वभाव पर ध्यान देते हुए भगवान बुद्ध की भी याद आती है। उन्होंने कभी गहन आत्म-निरीक्षण के क्षणों में बड़े विचार के बाद निर्णयात्मक स्वर में अपने अनुभवों के निचोड़ के रूप में अपने अनुयायियों को यह निर्देश दिया था। 'अप्प दीपो भव' यानी खुद अपने आप को ही दीया बनाओ। उन्होंने सब के सामने आत्म-संधान की एक कठिन चुनौती रखी जिसके लिए सतत साधना की जरूरत पड़ती है। वैसे तो दीपक और शरीर दोनों मिट्टी ही हैं पार्थिव तत्व से निर्मित हैं। परन्तु प्रकाश से आलोक बिखरने वाला दीप बनना आसान नहीं।

दीपक अपने अस्तित्व की परवाह किए बिना चेतना (प्रकाश) का विस्तार करता चलता है। यह कठिन चुनौती है। दीप बनना मनुष्य के आत्म-शोधन और आत्म-दान की माँग करता है जिसके लिए निष्ठा और समर्पण की आवश्यकता पड़ती है।

यह सामान्य अनुभव है कि दीया जलता है और जलते ही अपने चतुर्दिक के पूरे परिवेश को आलोकित कर जाता है। गरीब की झोंपड़ी से अमीर की अट्टालिका तक दीये का जोर रहा है। छोटे से मिट्टी के दीये के

प्रकाश के आगमन के साथ ही घोर से घोर अंधकार की भी तत्क्षण छुट्टी हो जाती है। इसीलिए दीप को 'ज्योति-तीर्थ' भी कहा जाता है। प्रकाश से ऊर्जा और ऊष्मा भी मिलती है जो जीवन को सम्भव करती है। पूरी सृष्टि को ही ऊष्मा की निरंतर दरकार बनी रहती है। मनुष्य ही नहीं पेंड-पौधे, खेत-खलिहान, जीव-जंतु सब-के-सब किसी न किसी मात्रा में प्रकाश की चाह रखते हैं। और तो और ऋतु चक्र भी मूलतः प्रकाश का ही खेल है। प्रकाश जीवन को नियमित-व्यवस्थित करता है। कहा जा सकता है कि प्रकाश है तो जीवन है ! प्रकृति के प्रसाद के रूप में सूर्यदेव का प्रकाश समस्त जगत को न जाने कब से मिलता आ रहा है। परंतु प्रकाश की ही तरह अंधकार भी एक अटल जीवन-सत्य है और उससे निरंतर लड़ते रहना और पार पाना मनुष्य जाति की नियति है। सबका अनुभव है कि जीवन कभी सीधी रेखा में नहीं चला करता क्योंकि सब कुछ पूर्वनिश्चित नहीं होता। मानव सभ्यता के इतिहास में हर युग में और हर जगह ऐसा होता रहा है। ऐसे में प्रकाश-अंधकार, सुख-दुख, प्रिय-अप्रिय, हानि-लाभ, जय-विजय सभी तरह के खट्टे-मीठे विपर्यासों के बीच से गुजरते हुए ही मनुष्य के जीवन की गति आगे बढ़ती है।

जब मनुष्य के लिए दीपक बनने के आदर्श की बात भगवान बुद्ध कह रहे थे तो निश्चय ही उनका आशय कुछ व्यापक था। दीपक कई दृष्टियों से एक अद्भुत रचना है जो रचे जाने के बाद अपने रचना-जगत का हुलिया ही बदल देता है। वह संस्कृति की समग्र संकल्प-शक्ति का सम्पूर्ण प्रतीक है। उसकी दृढता, उसका साहस, उसकी स्नेह से आपूरित रचना मनुष्य की एक लाजबाब कृति है। दूसरों को प्रकाश देते समय दीपक किसी तरह का भेद-भाव नहीं करता। वह एक अद्भुत दाता है जो बिना किसी कारण, निर्व्याज भाव से और बिना किसी से पूछे, जो भी उसके सम्पर्क में आता है सबको अकुंठ भाव से प्रकाश बाँटता-देता रहता है। उसका स्वभाव ही है दूसरों को निरंतर देते रहना बिना इसकी चिंता किए कि इस दान में उसका स्वयं का जीवन क्रमशः निःशेष होता जाता है। दीपक स्वयं तो निरपेक्ष रहता है। वह एक स्थितप्रज्ञ योगी की भाँति बिना किसी तरह की आशा के (निराशी!) और बिना मोह के (निर्मम!) हो कर अंधकार के विरुद्ध सतत युद्धरत रहता है। यही उसकी प्रकृति है और इसी में उसकी सार्थकता है। दीप बनने के लिए आवाहन करते हुए भगवान बुद्ध यह भी चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति किसी दूसरे श्रोत पर अवलम्बित न रह कर स्वयं अपने ही संसाधनों से तृप्त रहे – आत्मतृप्त! उधार लिए हुए प्रकाश या शक्ति पर भरोसा करने के अपने खतरे और जोखिम होते हैं।

महाभारत में भी दीप की, मानव मूल्यों के एक दीप की, परिकल्पना की गई है जिसमें सत्य का आधार, तप (अर्थात् संयम) का तेल, दया की बाती (दुखी जनों की चिंता) और क्षमा की लौ की बात कही गई है। अंत में सँभल कर दीया जलाने की हिदायत दी गई है जिससे अंधकार से अच्छी तरह लड़ा जा सके और रोका जा सके। अंधकार आसुरी प्रवृत्ति है। वह और कुछ नहीं हिंसा, द्वेष, कलह और लोभ आदि की दुर्बलताएँ हैं। इन्हें किसी भी कीमत पर जीवन पर हावी नहीं होने देना चाहिए। आज जीवन में निराशा और अविश्वास बढ़ रहा है। अनर्गल उपभोक्ता की तीव्र प्रवृत्ति उफान पर है। इस परिस्थिति में व्यक्ति वैभव पर अधिकार के लिए सन्नद्ध है। पर यह नहीं भूलना चाहिए कि गणेश जी गण देवता हैं अर्थात् वे सामान्य जन समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं और लक्ष्मी जी की पूजा उनके साथ ही करने का विधान है।



किसने जाना !

शन्नो अग्रवाल

किसने जाना कब क्या होगा
कुछ गा ले और कुछ हँस ले
भूल-भाल दुनिया के झमेले
कुछ आनंद शांति में ले ले।

जीवन के इन शेष दिनों में
मन स्थिर है अब ना डोले
अब चल तू कुछ हौले-हौले
कुछ जाग मुसाफिर कुछ सो ले।

पहुँच रही मंजिल तक नैया
बीच-बीच में अक्सर डोले
जीवन-पथ पर चलते-चलते
तन-मन में पड़ गये फफोले।

स्मृति के पट बंद हो रहे
शिथिल-शिथिल से अंग हो रहे
खच्चर सी काया कहती है
कुछ दिन और बोझ को ढो ले।

किसने जाना कब क्या होगा
कुछ गा ले और कुछ हँस ले
भूल-भाल दुनिया के झमेले
कुछ आनंद शांति में ले ले।

चलो, कहीं और चलें

डॉ. रमाकांत शर्मा

मैं वही कबूतर हूँ जिसका जन्म इसी छज्जे पर हुआ था। एक लम्बे अर्से बाद आज फिर इसी छज्जे पर आ बैठा हूँ। माँ ने बताया था, छज्जे के उस बाँए वाले कोने में उसने बहुत से तिनके और छोटी-छोटी टहनियाँ इकट्ठा कर अंडे देने के लिए घोंसला बनाया था। पर, जैसे ही वह अंडे देती पता नहीं कहाँ से कौओं को भनक पड़ जाती और वे उसके अंडे उठा ले जाते। वह रोती-कलपती और मन मसोसे देखती रह जाती। एक बार तो एक अंडे में से बच्चा भी निकल आया था, उसने उसे बचाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी, पर उन कौओं की संयुक्त शक्ति के सामने उसकी एक न चली थी और वे उसे उठा ले गए थे। वह बहुत फड़फड़ाई थी। उसने कई दिन तक मुँह में दाना भी नहीं डाला था और वह जड़-सी वहीं बैठी रही थी। कहते-कहते माँ का गला भर आया था और बेचैनी से उसके पंख फड़फड़ाने लगे थे।

“फिर मैं कैसे बच गया माँ” – मैंने अधीरता से पूछा था।

“मेरे बेटे, मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। कहते हैं ना – ‘जाको राखे साईया मार सके ना कोया।’ किसी ने छज्जे के उस कोने में एक पुराना गमला रख दिया था। इस बार मैंने और तुम्हारे पापा ने मिल कर उस गमले के पीछे की जरा सी जगह में तिनके इकट्ठे किये।

अंडे देते ही उन मरदूद कौओं की नाक तक उनकी खुशबू जा पहुँची थी। उनकी काँय-काँय सुनते ही मेरा मन घबराने लगता था। वे मेरे आस-पास मँडराते और अंडे झपटने की कोशिश करते, लेकिन गमले की दीवार से टकरा कर पीछे हट जाते। उस छोटी सी जगह के भीतर घुसने की उनकी तमाम कोशिशों को नाकाम होता देख मैं साहस से भर उठी थी। अंडों पर मैं जमकर बैठी रही और जैसे ही कोई कौआ अंदर घुसने की कोशिश करता मैं उसे चोंच मार कर भगा देती। पर, भाग्य के लेखे को कौन मिटा सकता है। एक दिन एक कौआ उस छोटी-सी जगह में जबरदस्ती आधा घुस आया और मेरे पंजों में दबे आगे वाले अंडे को बाहर खींच कर ले गया। बाहर कौओं का तेज शोर सुन कर मेरा दिल काँप उठा था। अंडे के साथ वे सब क्या कर रहे होंगे, मैं समझ सकती थी। पर, मैं क्या करती? अपने बच्चे अंडे की रक्षा करने में जी-जान से जुट गई। मैंने उसे और पीछे खींच लिया और उस पर जम कर बैठ गई। लाख कोशिशों के बाद भी कौए वहाँ तक नहीं पहुँच पाए और फिर जब तू अंडे से निकला तो मैं निहाल हो गई।

जब तक तू उड़ने लायक नहीं हो गया मैंने उस जगह से तुझे निकलने नहीं दिया। मेरे बेटे, हम पक्षियों में यह प्रथा है कि जैसे ही बेटे-बेटी अपने पंख तोलने लगते हैं, वे कहीं भी जाने को आजाद होते हैं। आज से तू भी आजाद है। जा बेटे, अपनी जिंदगी जी। पर, याद रखना कभी लालच, बेईमानी और बदनीयती के चक्कर में मत पड़ना। किसी से बेकार में नहीं उलझना, मत भूलना कि हमें शांति का दूत माना जाता है। लेकिन, अपने अधिकारों की रक्षा के लिए किसी के भी सामने डट जाना”।

मैंने अपनी पहली लम्बी उड़ान भरने के लिए पर फैलाए ही थे कि माँ ने चिल्लाकर कहा था – “अपना ख्याल रखना बेटे, बड़ी खराब है यह दुनिया, यहाँ किसी न किसी रूप में हर जगह कौए मौजूद हैं, पल-पल पर खतरे मुँह फाड़े खड़े हैं।” मैंने उड़ान भरते हुए पीछे मुड़ कर देखा था और कहा था – “अपना और पापा का भी ख्याल रखना माँ।”

अपने छोटे-छोटे लेकिन मजबूत पंखों को लहराते हुए मैं ऊपर, और ऊपर उड़ता चला गया था। कितना अच्छा लग रहा था, दूर-दूर तक फैले पूरे शहर के ऊपर से उड़ना, एक के बाद एक मोहल्लों को पीछे और नीचे

छोड़ते हुए ऊपर उठते जाना, आसमान में यहाँ-वहाँ बिखरे बादलों का पास से गुजरना, कितने ही रंगबिरंगे पक्षियों के साथ दौड़ लगाना, पहाड़ियों के पीछे से उगते और फिर ऊपर उठते जाते चमकते सूरज को देखना, हरी-भरी वादियों से गुजरना, पेड़-पौधों की भीनी-भीनी खुशबुओं का मजा लेना और विपरीत हवाओं के झोंकों से लड़ते हुए अपनी उड़ान कायम रखना।

कबूतरखाने से पेटभर दाना चुगने के बाद मैं बस यूँ ही इधर-उधर उड़ता रहा। मैं शहर के बीचों-बीच बने घंटाघर की मुंडेर पर जाकर बैठ गया। यहाँ से चारों तरफ और दूर-दूर तक देखा जा सकता था। सड़कों पर साइकिल, रिक्शे, ताँगे, बसें और एक से एक सुंदर और महँगी कारें दौड़ी चली जा रही थीं। सिग्नल की लाल लाइट होते ही सारे वाहन एक के पीछे एक लाइन लगा कर रुक जाते और हरी बत्ती होते ही फिर से चल पड़ते। उनका रुकना और फिर से चल देना मुझे खेल जैसा लग रहा था। मैं काफी देर तक उस दृश्य का मजा लेता रहा। लेकिन, जब कुछ लोग लाल बत्ती होते हुए भी अपनी और दूसरों की जान की परवाह किए बिना दन से निकल जाते तो मुझे बहुत बुरा लगता। पुलिसवाला उन्हें पकड़ भी लेता तो उसकी जेब में कुछ डाल कर वे बेखौफ आगे बढ़ जाते।

सड़क पर सामान से ठसाठस भरे ठेले भी जा रहे थे, जिन्हें मजदूर दम लगा कर खींच रहे थे और सिर से पाँव तक पसीने से भीगे थे। सामने की तरफ एक बड़ी बिल्डिंग बन रही थी, जहाँ मजदूर तेज धूप की परवाह किए बिना ईंट-पत्थर उठाने और उन्हें जमाने के काम में लगे थे। मजदूर महिलाएँ गारे-मिट्टी से भरे तसले सिर पर उठाए इधर-उधर आ-जा रही थीं। उनके बच्चे वहीं धूल-मिट्टी में खेल रहे थे और बहुत छोटे बच्चे कपड़े से बने झूलों में बेसुध सोये थे या फिर भूख-प्यास से रो-रो कर अपनी माँओं का ध्यान अपनी तरफ खींचने की कोशिश कर रहे थे। मेरा मन किया कि मैं उड़ कर जाऊँ और उनकी माँओं को बताऊँ कि उनके दुधमुँहे बच्चे भूखे-प्यासे रो रहे हैं। उन्हें पहले अपने बच्चों का ध्यान रखना चाहिए।

मैं उड़ने को ही था कि घंटाघर की उस मुंडेर पर एक कबूतरी मुझसे कुछ दूर आकर बैठ गई। मैंने चोरी-छिपी नजरों से उसे देखा तो बस देखता ही रह गया। वह बहुत खूबसूरत थी। उसके चमकते स्लेटी पंखों के ऊपर बीचों-बीच दो काली रेखाएँ उसके सौंदर्य में इजाफा कर रही थीं। वह अपनी चोंच आधी खोले और पपीते के बीज जैसी अपनी काली गोल आँखें झपकाते हुए अपनी गर्दन शाही अंदाज में घुमा रही थी। मैं अपनी नजरें उस पर से उठा ही नहीं पा रहा था। तभी उसने कई बार अपने पंख फड़फड़ाए और मेरी तरफ देखा। उससे नजरें मिलते ही मैं बुरी तरह घबरा गया था। मेरी घबराहट देख कर वह हल्के से मुस्कराई थी और फिर अपने छोटे-छोटे गुलाबी पंजे उठाते हुए मेरे पास खिसक आई थी। मैं इधर-उधर देखने और बच निकलने का रास्ता तलाशने ही लगा था कि उसकी चीनी में पगी गुटरगूँ ने कानों में रस घोलते हुए कहा था - “मुझसे दोस्ती करोगे?” जवाब में मैंने अपने पर उसके पंखों पर फैला दिए थे। उस दिन के बाद से मेरी दुनिया में कई रंगीन इंद्रधनुष खिल उठे थे और हम तिनके-टहनियाँ इकट्ठी कर कहीं घर बसाने की सोचने लगे थे।

दूसरों के लिए प्यार की पाती ले जाने वाले हम कबूतरों के सीने में भी दिल धड़कता है और उसमें प्यार की सरिता बहती है। उस बंद मकान के एक कमरे में बनी आलमारी के ऊपर मेरी कबूतरी ने दो अंडे दिए तो हमारी खुशी का पारावार न रहा। यहाँ कौओं का डर नहीं था। हम निश्चिंत थे और अपने नन्हें-मुन्नों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। तभी वह घटना घटी जिसने हमारे अरमानों को चकनाचूर कर दिया। मैं कबूतरखाने से चुगगा लेकर खिड़की से कमरे में घुस ही रहा था कि सामने के दरवाजे से एक बिल्ली को दबे पाँव कमरे में घुसते देख कुशंकाओं से भर उठा। मैं कबूतरी को सचेत कर पाता उससे पहले ही बिल्ली ने उछल कर उस पर झपट्टा मार दिया। दोनों अंडे नीचे गिर कर फूट गए और मेरे देखते-देखते ही वह कबूतरी को अपने मुँह और पंजे में दबोच कर ले भागी। मैं हत्भागा बस देखता ही रह गया। मैं रोने और फड़फड़ाने के अलावा और कर भी क्या सकता था।

मेरी सारी खुशियाँ बिखर गई थीं। न दाना खाने को मन करता न पानी पीने को। कई दिन बदहवासी में गुजरे। मैंने वह जगह छोड़ दी और अपने मन की बेचैनी से छुटकारा पाने के लिए धार्मिक स्थलों में जाकर रहने के लिए निकल पड़ा।

मैं एक-एक कर सभी धर्मों की इबादतगाहों में गया और उनके बुजों, छतों या फिर छज्जों पर बैठ कर अपने मन को शांति देने का प्रयास करता रहा। पर, ज्यादातर धर्म के नाम पर चल रहे अंधविश्वासों, झूठ, लूट और मनुष्य से मनुष्य को लड़ाने वाले, मानवता को लज्जित-कलंकित करने वाले कारनामे देख कर दंग रह गया। इन पवित्र कहे जाने वाले स्थानों में धर्म के नाम पर हर तरह की गंदगी और भोले-भाले लोगों का शोषण देख कर मेरी बेचैनी खत्म होने की जगह और बढ़ गई और वहाँ से निकल भागने में ही मुझे भलाई नजर आई।

उड़ते-उड़ते मैंने सोचा मुझे जंगल की ओर निकल जाना चाहिए। वहाँ की हरियाली, बहती नदियों, कल-कल करते झरनों, फूलों भरी वादियों और तरह-तरह के पक्षियों के बीच जाकर मुझे जरूर सुकून मिलेगा। पशु-पक्षियों के लिए जंगल से बेहतर जगह और हो ही क्या सकती है।

जंगल में पेड़ों की लगातार कटाई से जंगल आधा रह गया था। नदी का नीला पानी गंदला हो चुका था और वह नाले में तब्दील हो गयी था। कटते जंगल ने तरह-तरह के जानवरों को खुली जगह पर निकल आने के लिए मजबूर कर दिया था। शिकार करते और शिकार होने से बचने के लिए भागते जानवरों को देख कर मेरा मन काँप उठा। तभी मेरी नजर दूर से आते एक बाज पर पड़ी। वह तूफानी गति से इधर ही बढ़ा चला आ रहा था। मैंने घनी पत्तियों की ओट में अपने को छुपा लिया। उड़ कर भागना तो और भी बड़ा खतरा मोल लेना था। मैं पल-पल अपनी तरफ बढ़ती मौत का इंतजार करने लगा। पर, वह मुझ पर झपटने के बजाय सामने के पेड़ की डाल पर बैठी उस सुनहरे रंग की छोटी सी चिड़िया पर आसमानी आफत बन कर टूट पड़ा और उसे उठा ले गया जो सबकुछ भूल कर मस्ती में गीत गा रही थी। कुछ क्षण पहले गाती-चहचहाती वह चिड़िया अपने जीवन को बचाने के लिए फड़फड़ा भी तो नहीं पाई थी। बिल्ली के पंजों में बेबस दबी कबूतरी मेरी आँखों के सामने नाच गई और आँसुओं से मेरी आँखें धुँधला आईं। मेरी रूह काँप उठी और मैं बदहवास सा उसी क्षण शहर की तरफ उड़ लिया।

थक कर मैं एक स्कूल के मैदान में उगे पेड़ पर उतर गया। मैं जिस पेड़ पर बैठा था उसके नीचे चारों तरफ ईंटें और सीमेंट लगा कर बैठने की जगह बना दी गई थी। दो मास्टरनियाँ क्लास की माथा-फोड़ी से बचने और खुली हवा में साँस लेने की नीयत से वहाँ आकर बैठ गई थीं। लम्बी-सी छरहरी मास्टरनी कह रही थी – “शोभा, क्या बताऊँ तुम्हें, हैडमास्टर जी का व्यवहार कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आजकल क्लास छोड़ कर कभी भी अपने केबिन में बुला लेते हैं और इधर-उधर की बातें करते रहते हैं। कल कह रहे थे - रोजाना शाम को थोड़ी देर रुक जाया करो, आपको प्रमोशन के इंटरव्यू की तैयारी करवा दूँगा।

शोभा जोर से हँस पड़ी थी – “उसके चक्कर में मत आ जाना। वह कमीना तो मुझसे भी यही सब कह चुका है। शिक्षक के वेश में कुछ हैवान भी हैं यहाँ जो स्कूल की बच्चियों के साथ हैवानियत पर उतर आते हैं। तुम्हें याद नहीं कैसे बच्चियों ने उस लम्बे बालों वाले मास्टर की शिकायत की थी और स्कूल में एक हंगामा ही खड़ा हो गया था ...।”

मुझसे आगे सुना नहीं गया और मैं थकान के बावजूद वहाँ से तुरंत उड़ गया। कुछ देर मैं यँ ही इधर-उधर उड़ता रहा। तभी मुझे नीचे सड़क पर एक बारात जाती दिखाई दी। बारात बहुत धूमधाम से निकल रही थी। मैं थोड़ा नीचे उतरा और सड़क के किनारे बने एक मकान की छत पर उतर कर बारात देखने लगा। घोड़ी पर बैठे दूल्हे ने किसी से बात करने के लिए अपना सेहरा थोड़ा उठाया तो उसका झुर्रियों भरा चेहरा देख कर मैं आश्चर्य से भर उठा। उत्सुकतावश मैं और नजदीक की एक दुकान पर जा बैठा। पता चला छियत्तर वर्ष का वह अमीर आदमी गरीब घर की उन्नीस साल की लड़की को ब्याहने जा रहा था। इस अजीबो-गरीब वाक्य पर बारात देखने खड़े लोग आपस में चर्चा कर रहे थे। एक आदमी दूसरे से कह रहा था – “अमीरों की दुनिया में सब

चलता है। अब यही देख लो, खाड़ी देशों से कितने ही अमीर हमारे देश में आते हैं और अपने से उम्र में दुगुनी-तिगुनी छोटी नाबालिग बच्चियों को ब्याह कर ले जाते हैं।" मैं हैरत से यह सब सुन रहा था और मनुष्यों की दुनिया को समझने की कोशिश कर रहा था।

मुझे माँ की बहुत याद आ रही है। मैं इस छज्जे पर कई दिनों से रुका हूँ। माँ-पापा का कोई अता-पता नहीं है। वे इस दुनिया में हैं भी या नहीं, मुझे नहीं पता। फिर भी एक आस लिये और बचपन की यादें लिये मैंने इसी छज्जे पर डेरा डाला हुआ है। दाने-पानी के लिए कबूतरखाने चला जाता हूँ। कभी कोई पुराना दोस्त मिल जाता है तो थोड़ी गप्पें भी हो जाती हैं। कई कबूतरियों ने मुझमें रुचि भी दिखाई है, पर मन में एक डर सा समाया हुआ है। उस कबूतरी के जाने के बाद मन कहीं रमता नहीं है। सबकुछ सूना-सूना सा लगता है।

इस ऊँचे छज्जे से पूरे मोहल्ले की गतिविधियों को देखा जा सकता है। थोड़ी दूर से गुजरती सड़क की चहल-पहल भी दिखाई देती है। सड़क के उस मोड़ पर हमेशा मैला-सा कपड़ा बिछाए एक भिखारी बैठा रहता है। मैंने उसे कभी नहाते नहीं देखा। उसके सामने रखे कटोरे में यदा-कदा लोग पैसे और खाने का सामान डाल जाते हैं। कुछ समय से एक भिखारिन ग्यारह-बारह साल की एक बच्ची के साथ उसके पास आकर बैठने लगी है। बच्ची आसपास से गुजरते लोगों और सिग्नल पर रुकने वाली कारों में बैठे लोगों से भीख माँग कर लाती है और उस औरत को सौंप देती है। कभी-कभी उसे जब कुछ भी नहीं मिलता या बहुत कम मिलता है तो उसे उस औरत की डाँट और लात-घूँसे खाने के लिए तैयार रहना पड़ता है। वह यह भी जानती है कि उस दिन उसे आधा पेट या बिलकुल भूखा रहना पड़ेगा।

ऐसे ही एक दिन जब वह भूखी-प्यासी सिग्नल पर रुकी कार वालों से भीख माँग रही थी तो उसमें बैठे मनचलों में से एक ने उससे कहा था – “अरे बाह, अच्छी-खासी दिखती है। नहा-धो लेगी तो राजकुमारी लगेगी। भीख क्यों माँगती है, आज्ञा हमारे साथ चल।” जब तक कोई कुछ समझ पाता, कार का दरवाजा खुला और उसे अंदर खींच कर गाड़ी रवाना हो गई। भिखारिन चीखती-चिल्लाती और सिर पीटती रही। मुझे बड़ा अजीब-सा लगा जब यह सब होता देख कर लोग तमाशबीन बने खड़े रहे। मैं उड़ कर उस कार के पीछे भागा भी, पर अपनी बिसात जल्दी ही समझ में आ गई और मैं लौट आया।

छज्जे के सामने बाईं तरफ कत्थई रंग में पुता वह छोटा सा मकान हमेशा मेरा ध्यान खींचता रहता है। उसके कमरों की खिड़कियों से झाँकती, काम करती या फिर बारामदे में घूमती वह कमसिन और खूबसूरत लड़की मुझे अक्सर नजर आ जाती है। उसके चेहरे का भोलापन उसकी खूबसूरती को और बढ़ा देता है। मन करता है, बस उसे देखते रहो। उसके हाथों में लगी मेंहदी और कलाईयों में कुहनियों तक पहने चूड़े और हरी चूड़ियों से आसानी से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसकी शादी हाल ही में हुई है। ज्यादातर वह अपने सिर पर पल्ला लिये रहती है, यकीनन यह उसका सुसराल होगा।

इतने दिनों में मैंने उसे कभी छत पर आते नहीं देखा था, इसलिए आज उसे छत पर देख थोड़ा आश्चर्य हुआ। उसे एकदम पास से देखने का यह मौका मैंने हाथ से नहीं जाने दिया और मैं उड़ कर उसकी छत की डौली पर जाकर बैठ गया। वह डौली से पीठ टिका कर जमीन पर बैठी हुई थी। पास से देखने में तो वह इतनी मासूम और सुंदर लग रही थी कि क्या बताऊँ। पर, उसकी आँखों से लुढ़क कर गालों पर बहते आँसू देख कर मैं चौंक गया। फिर वह दोनों हाथों में मुँह छुपा कर हिचकियाँ भर-भर कर रोने लगी थी। सहानुभूति में पगी मेरी गुटरगूँ पर उसका जरा भी ध्यान नहीं था। तभी नीचे से किसी ने उसे आवाज लगाई तो वह हड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई और धोती के पल्लू से आँखें पोंछते हुए तुरंत सीढ़ियाँ उतर गई। मैं बेचैनी में काफी देर तक उसी छत पर इधर-उधर उड़ता रहा और फिर हार कर अपने छज्जे पर लौट आया। मन उदास हो आया था, इसलिए मैं कबूतरखाने चला गया। वहीं से अपने दोस्तों के साथ दस मील की दूरी पर बसे एक छोटे से खूबसूरत गाँव में चला गया। वहाँ मन इतना रमा कि हम कुछ दिन वहीं टिक गए।

जब वापस छज्जे पर आया तो उस कथई पेंट वाले मकान में वह लड़की कहीं दिखाई नहीं दी। ध्यान से देखा तो बाहर दरवाजे पर ताला लगा हुआ था। शायद वे लोग कहीं बाहर गए हुए थे। मन लगाने के लिए मैं उड़ता हुआ गली के नुक्कड़ वाली चाय की दुकान पर जाकर बैठ गया। यहाँ बैठ कर चाय पी रहे लोगों की गपशप सुन कर आप आसानी से अपना समय निकाल सकते हो। लेकिन, आज उनकी बातों से मुझे जो कुछ पता चला, उसने मेरे होश उड़ा दिए हैं। किचन में काम करते समय उस लड़की के कपड़ों में अचानक आग लग गई थी और वह अस्सी प्रतिशत तक झुलस गई थी। अस्पताल ले जाने से पहले ही उसने दम तोड़ दिया था। उसकी माँ ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए उस लड़की का एक पत्र भी सौंपा था जिसमें उसने लिखा था – “माँ, मुझे दहेज को लेकर रोजाना तंग किया जाता है। पापा ने जीवन भर की कमाई इन्हें पहले ही सौंप दी है। किस मुँह से उनसे इनकी माँगे पूरी करने के लिए कहूँ? आपको सौगंध है, पापा को कुछ मत बताना। वे परेशान हो जाएँगे और मुझे खुश देखने के लिए खुद को बेचने के लिए भी तैयार हो जाएँगे। माँ, पता नहीं, कैसे और कब तक रह पाऊँगी इस घर में। क्यों मुझे ऐसे लोगों के हाथ सौंप दिया माँ।”

मैं सन्न रह गया हूँ। मुझे उस दिन के उसके आँसुओं का रहस्य पता चल गया। हे भगवान! इंसानों को इतनी हवस क्यों दी है? उनसे तो हम कबूतर ही भले। हमें तो कुछ दाने, थोड़ा सा पानी और घर बसाने के लिए कुछ तिनके-कुछ टहनियाँ ही चाहिए, बस।

ठीक छज्जे के सामने वाले घर की खिड़की में से चलता टीवी मुझे साफ दिखाई देता है। एक दिन भी तो ऐसा नहीं जाता जब हत्या, लूट, बलात्कार, अत्याचार, बेईमानी, धोखेबाजी, दंगे-फसाद और ऐसी ही अन्य दरिंदगी भरी खबरें किसी न्यूज-बुलेटिन में न हों। हर पल मारकाट, आतंक और युद्ध करने की फुरसत किन लोगों के पास है? कौन हैं वो लोग जिन्हें खून की होली खेलने और दुनिया को विनाश के रास्ते पर ले जाने से खुशी मिलती है? ये नेता लोग जनता की भलाई के काम करने के बजाय आपस में आरोप-प्रत्यारोप क्यों करते रहते हैं? सिर्फ इसलिए किसी को जान से मार देना कि उसकी विचारधारा आपकी विचारधारा से मेल नहीं खाती, हैवानियत नहीं तो और क्या है? एक-दूसरे के धर्म, भाषा, खानपान और विचारों को लेकर झगड़ने की क्या जरूरत है? फिर जब जंगलों, पशु-पक्षियों और मासूमों पर बेतहाशा होते जुल्मों की खबरें सुनने में आती हैं तो मन कैसा-कैसा तो होने लगता है।

मैंने कई बार सोचा है, उस ऊपर वाले ने इतनी सुंदर दुनिया बनाई है, पूरी धरती को असंख्य उपयोगी चीजों से पाट दिया है। फिर इस सबका आनंद उठाने की जगह गिनती की अपनी साँसों को ऐसी उल्टी-सीधी और दूसरों को कष्ट देने वाली हरकतों पर खर्च करके क्या मिलेगा? हो सकता है, मैं यह सब इसलिए सोच रहा हूँ कि मैं कबूतर हूँ जिसे शांति-दूत माना जाता है। मैं मनुष्यों की तरह सोचता तो शायद ऐसी वीभत्स घटनाओं का औचित्य सिद्ध कर पाता। अब यही देख लो, ये हमें कहते तो शांति-दूत हैं, पर युद्ध के समय हमारा इस्तेमाल जासूसी के काम में कर डालते हैं। फिर, विशेष अवसरों पर हमें शांति-दूत कह कर उड़ाने का क्या मतलब? क्या हमें उड़ाने से पूरे विश्व में शांति आ जाएगी? मुझे लगता है, हमें उड़ाने के बजाय हर व्यक्ति को खुद शांति दूत बन जाना चाहिए?

मेरा मन गुनगुनाने लगा है – ‘ए मेरे दिल कहीं और चल, गम की दुनिया से दिल भर गया ।’ मैं इस छज्जे से उड़ चला हूँ, पता नहीं कहाँ जाऊँगा। अभी और दुनिया देखनी है मुझे, अभी और समझना है इसे। पूरी सृष्टि को इतनी सूक्ष्मता और सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाने और उसमें जीवन भरने वाले उस ऊपरवाले की दुनिया सिर्फ और सिर्फ वैसी विकृत और विद्वप तो नहीं हो सकती, जैसी दिखती है।



गुड टच बैड टच!

रश्मि विभा त्रिपाठी 'रिशू'

"ओह कितना क्यूट है ये डॉगी" ७ वर्षीय अलीशा खुशी से चहक उठती है.

"तुम खेल सकती हो इसके साथ ये तुम्हें डरायेगा नहीं," पड़ौसी नासिर उसके पास आकर बोला.

"सच में अंकल!"

"हाँ बिल्कुल."

"इसका पप्पी भी बहुत क्यूट है देखना चाहोगी."

"हाँ."

"तो चलो मेरे साथ" नासिर उसे अपने साथ अपने घर ले जाता है.

"अंकल दरवाजा क्यूँ बन्द कर रहे हो आप और कुत्ते का बच्चा कहाँ है?"

"उसको तुम बाद में देखना पहले आज हम एक सीक्रेट गेम खेलेंगे जिसमें तुम्हें बहुत मजा आयेगा. मगर इस सीक्रेट गेम का एक रूल है कि तुम इसके बारे में कभी किसी को कुछ नहीं बताओगी, रूल तोड़ने पे तुम्हें सजा मिलेगी."

"नहीं....मुझे नहीं खेलना ये सीक्रेट गेम. आप गंदे हो झूठ बोल कर मुझे अपने घर लाए हो. नहीं देखना मुझे कुत्ते का बच्चा."

"सुनो तो...."

"नहीं...अलीशा जोर से चीखी- "मुझे मत छुओ, दरवाजा खोलो मुझे जाने दो."

कहीं अलीशा का शोर सुन कर पड़ौसी इकट्ठे न हो जायें ये सोच नासिर ने उसे तत्काल वहाँ से जाने दिया.

"माँ अंकल ने मुझे अजीब तरह से यहाँ छुआ, मुझे हर्ट हुआ अच्छा नहीं लगा, वो अच्छे नहीं हैं, मुझे झूठ बोल कर बहाने से अपने घर ले गए, बोले कि हम आज एक सीक्रेट गेम खेलेंगे किसी को बताना मत" घर आकर अलीशा अपनी माँ से रोते हुए बोली.

"क्यूँ गई तुम उसके साथ?" अंजलि अलीशा से बोली- "पापा ने मना किया था ना किसी के घर नहीं जाते, मगर ये अच्छा किया तुमने कि तुम जोर से चीखीं और "नहीं" कहा, इससे उसकी हिम्मत तुम्हें अब दोबारा छूने की नहीं होगी. सुनो बेटा, किसी तितली को जब छूने की कोशिश करती हो वो उड़ कर दूर चली जाती है ना, किसी डॉगी को छूने की कोशिश करने पर वो दूर हटता है और हमें डराने की कोशिश करता है. जानवर भी स्पर्श को समझते हैं. तुम्हें भी ये जानना बेहद ज़रूरी है - स्पर्श यानी टच - गुड टच और बैड टच. माँ पापा तुम्हें गोद में ले के प्यार से दुलारते हैं जो तुम्हें बेहद अच्छा लगता है, तुम्हें खुशी मिलती है, ये गुड टच है. इसके अलावा तुम्हें कोई भी अजनबी इस तरह से छूता है जिससे तुम्हें अच्छा महसूस न हो, तुम्हें गुस्सा आता है या तुम डर जाती हो, दुखी हो जाती हो तो ये बैड टच है. तुम्हारे शरीर के निजी अंग तुम्हारे अपने हैं जिन्हें कोई भी नहीं छू सकता. तुम्हारे शरीर पर सिर्फ तुम्हारा हक है."

"माँ पापा के सिवा कोई तुम्हें कोई टच नहीं कर सकता. हाँ डॉक्टर अंकल तुम्हें छू सकते हैं मगर सिर्फ तुम्हारी माँ की मौजूदगी में. याद रखो बेटा तुम भगवान के घर से इस दुनियाँ में भेजी गयी माँ और पापा की एक खूबसूरत परी हो, तुम अनमोल हो बेशकीमती हो. तुम्हें छूने का हक किसी को नहीं है, सिवाय तुम्हारे माँ

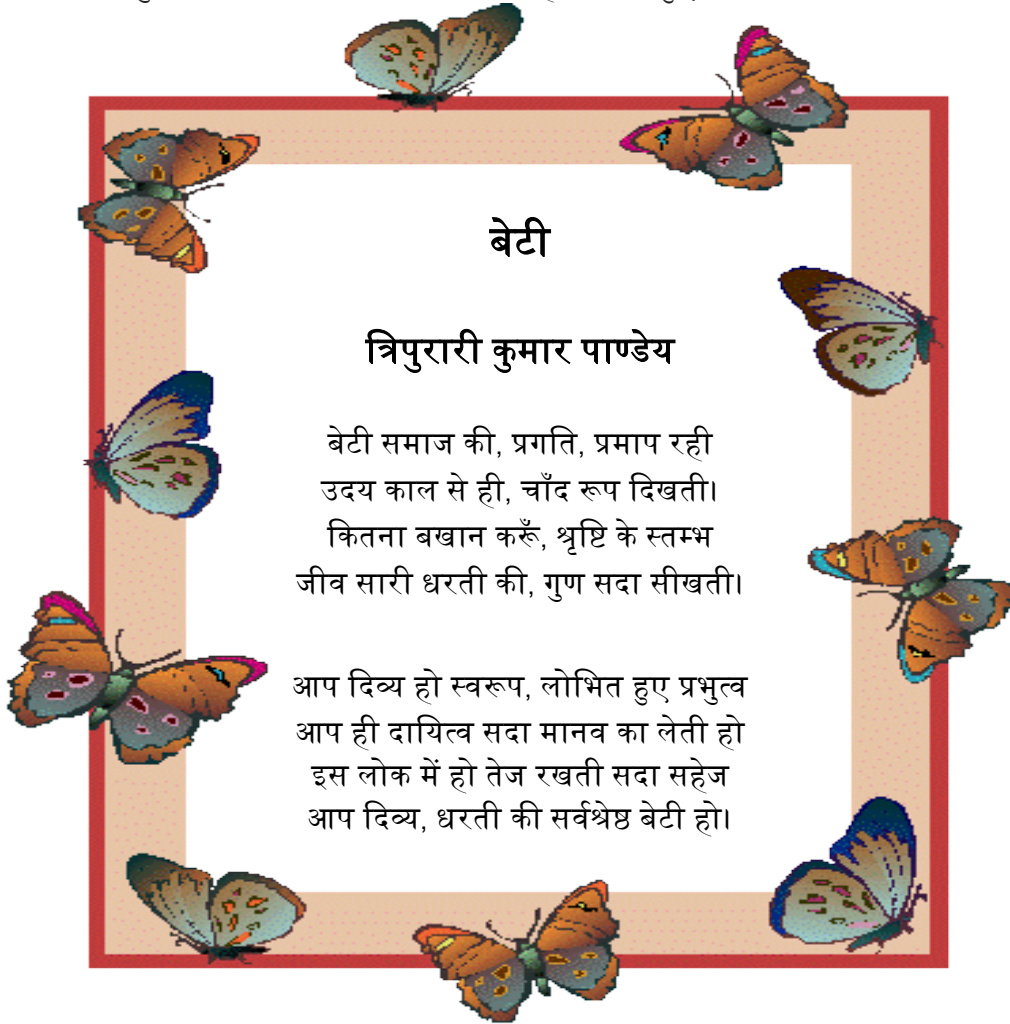
पापा के. ध्यान रहे अगर कोई भी अजनबी तुम्हें कभी छूने की कोशिश करे तो जोर से चीख कर कहो "नहीं" और वहाँ से भाग कर किसी सुरक्षित जगह पर जाकर किसी ऐसे आदमी को बताओ जिस पर तुम्हें पूरा भरोसा हो - जैसे कि माँ-पापा, स्कूल टीचर, प्रिन्सिपल इत्यादि."

"अब कभी भी कोई बहाना बना कर कि तुम्हारी माँ की तबियत बहुत खराब है जल्दी घर चलो, तुम्हारे पापा का एक्सीडेंट हुआ है, या मेरे पास एक सुंदर डॉल है तुम लेना चाहोगी, इस तरह बोल कर तुम्हें अपने साथ चलने के लिये कहे तो तुम्हें कभी भी किसी के साथ कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है. जिसे तुम जानती नहीं उस पर भरोसा कभी मत करना. अब बैठो और अपना होम वर्क कर लो फिर मैं खाना खिलाऊँगी तुम्हें." अंजलि उठ कर किचन में जाने लगी

"माँ मैं डर रही थी कि आपको बताऊँगी तो आप मुझे बहुत डाँटोगी." अलीशा माँ का हाथ थाम कर धीमे स्वर में बोली, "मेरी प्यारी बच्ची आज तुमने बेहद समझदारी का काम किया है. वो शैतान तुम्हें नुकसान पहुँचा सकता था, मगर तुमने विरोध किया, तुम उसके सामने डरी नहीं. मेरी बच्ची मुझे तुम पर गर्व है कि तुम मेरी बेटी हो, आई लव यू सो मच बेटा और हाँ! माँ पापा बच्चों के सबसे खास दोस्त की कैटेगरी में आते हैं इसलिये कभी भी उनसे कोई भी बात नहीं छुपानी चाहिये उन्हें हर बात सबसे पहले बतानी चाहिये.

"कभी नहीं छुपाऊँगी माँ पक्का प्रॉमिस."

"मेरी प्यारी गुड़िया" अलीशा के सर पर प्यार से हाथ फेरते हुए अंजलि उसे अपने सीने से लगा लेती है.



समता, सरसता साथ क्या गिनाऊँ कितनी बात
साथ देती हर बात, अद्भुत कलाम है।
अगर आप देखो आज, बेटी का ही है राज
देवता का धरती पर अनोखा वरदान है।

पिता की है लाडली, माता की है प्राण,
भाई का गहना स्वरूप है समाज का
चाँद है वो धरती का, रिश्तों में अपूर्व जोड़
चमकती सितारे बेटी हैं आज की।

राष्ट्र की विधाओं में साथ-साथ हाथ धर
हर प्रयोग में निखार लाती है बेटियाँ।
विश्व के अनेक खंड में तपस्वनी प्रचंड
दंड के भी क्षेत्र में दिखती है बेटियाँ।

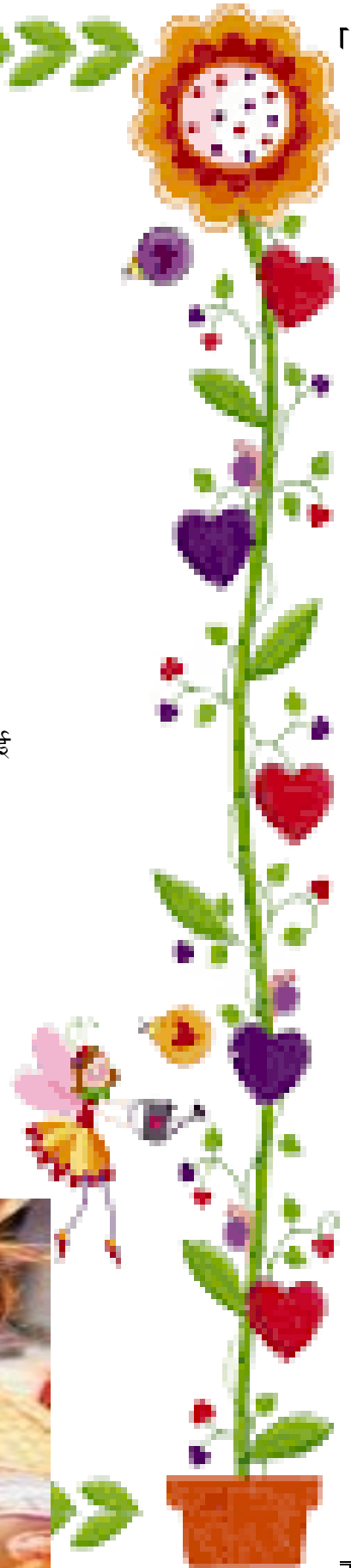
घर-घर सहज भाव, प्रेम-प्यार का प्रभाव
नित्य प्रति धर स्वभाव लाती है बेटियाँ।
पर अजीब घोर पाप, होता है पश्चताप
कोख में अधूरी मर जाती है बेटियाँ।



मेरी लाड़ो

पूजा सिंह

मेरी लाड़ो
क्यूँ तू इतनी जल्दी बड़ी हो गई
कल ही तो मेरी गोद से उतरकर
चलना सीखी थी
आज दहलीज पार कर
किसी और के आँगन की लक्ष्मी बन गई
मेरी लाड़ो
कब तू बड़ी हो गई
कल ही तो तुतलाया करती थी
आज सही-गलत के बोल बोलना सीख गई
मेरी लाड़ो
कैसे तू बड़ी हो गई
जो तू कदम बढ़ाने से डरा करती थी
और आज समुद्र पार कर गई
मेरी लाड़ो
क्या सच में
तू इतनी बड़ी हो गई
जो अपने बाबा की ऊँगली को छोड़
दूसरे का हाथ थाम चली गई।



यादें...

गीतिका सक्सैना

जब भी मैं ससुराल से मायके आती हूँ
अपना आधा कुछ वहीं छोड़ आती हूँ

एक हाथ जिसने किया है वादा
उम्र भर देने का साथ
कुछ कसमें कुछ वादे
कुछ कच्चे कुछ पक्के इरादे
कुछ सिलसिले बातों के
कुछ किस्से रातों के
कुछ सिलवटें कुछ करवटें
कुछ हूँ
हँसना कुछ खिलखिलाना
कुछ रूठना कुछ सताना
कुछ मनाना कुछ मान जाना
और कुछ साथ बिताए हुए लम्हे खास...
जब भी मैं ससुराल से मायके आती हूँ
तू तो नहीं पर तेरी याद आती है साथ
मुझको वापस बुलाने को रोज़ देती है आवाज़...

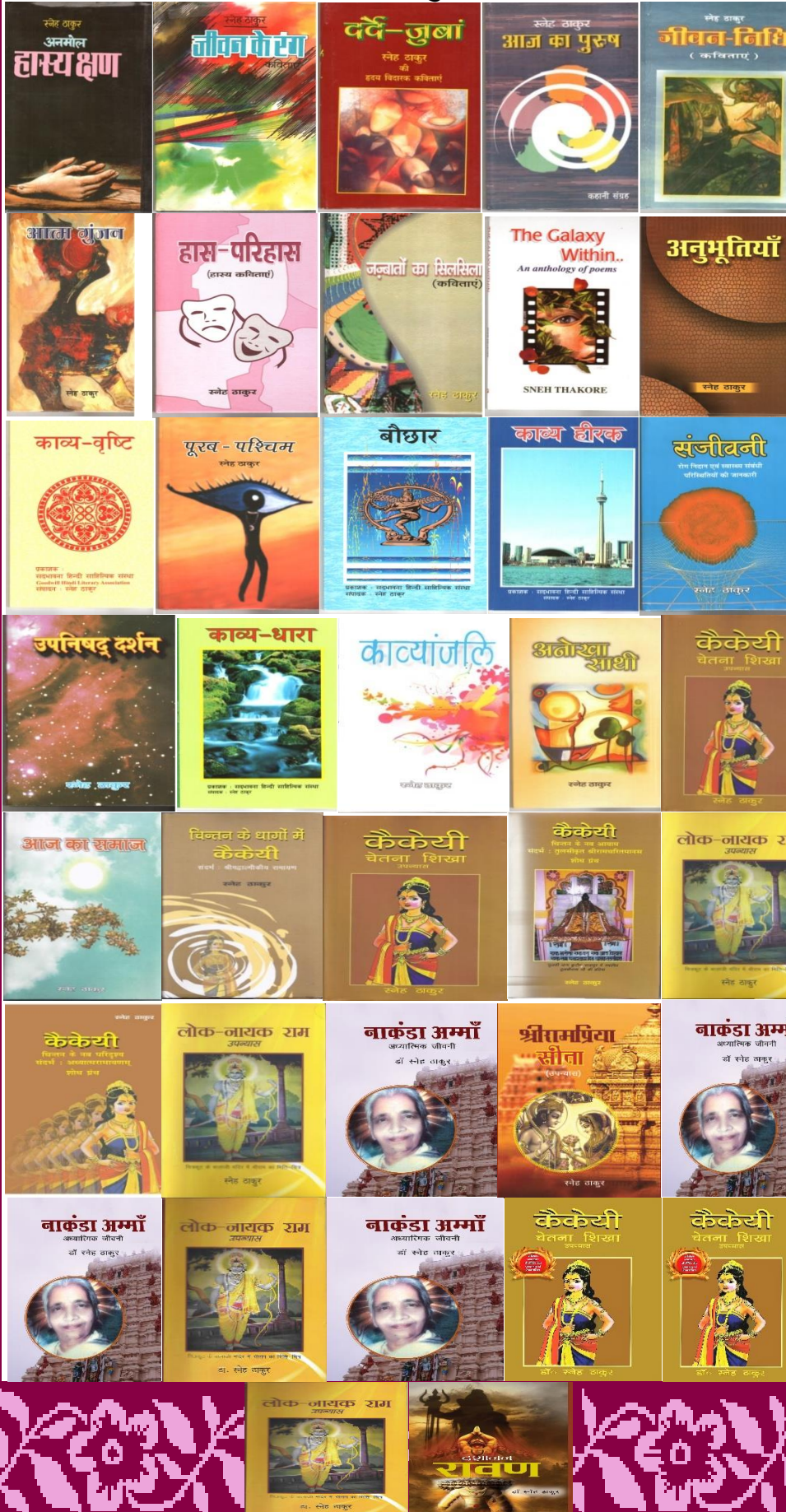
और फिर

जब मैं मायके से ससुराल आती हूँ
 अपना आधा कुछ वहीं छोड़ आती हूँ
 एक हाथ जिसने किया है वादा
 रखने का अपनी छाँव में सदा अपने साथ
 कुछ किस्से बचपन के कुछ मेरे लड़कपन के
 कुछ खेल कुछ खिलौने
 कुछ पुराने ख्वाब सलौने
 कुछ शैतानियाँ कुछ नादानियाँ
 कुछ मेरे वजूद की निशानियाँ
 कुछ मनमानियाँ कुछ आज्ञादियाँ
 कुछ रिश्ते खून के कुछ रिश्ते सुकून के
 कुछ पिता का लाड़ कुछ माँ का दुलार
 और कुछ जन्म से विदाई के लम्हे खास...
 जब भी मैं मायके से ससुराल जाती हूँ
 छोड़ जाती हूँ दो लोग लगाए हुए आस
 कि बिटियारानी जल्दी ही लौटकर फिर आयेगी उनके पास...

बेटियों की ज़िंदगी भी बड़ी निराली है
 कुछ छोड़ जाती हैं कुछ पा जाती हैं
 इधर पिता के घर की राजकुमारी
 उधर पति के घर की रानी कहलाती हैं।



डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

दशानन रावण	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, तृतीय संस्करण)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी, द्वितीय संस्करण)
श्रीरामप्रिया सीता	(उपन्यास)
नाकंडा अम्मा	(अध्यात्मिक जीवनी)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, द्वितीय संस्करण)
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास)
लोक-नायक राम	(उपन्यास)
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ)	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण)
चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमदवाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)	(सामाजिक लेख-संग्रह)
आज का समाज	(उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(कहानी-संग्रह)
अनोखा साथी	(काव्य-संग्रह)
काव्यांजलि	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य-धारा	(दार्शनिक एवं अध्यात्मिक)
उपनिषद दर्शन	(स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख)
संजीवनी	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य हीरक	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
बौछार	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
पूरब-पश्चिम	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
काव्य-वृष्टि	(काव्य-संग्रह)
अनुभूतियाँ	(A collection of English poems)
The Galaxy Within	(काव्य-संग्रह)
ज़्ज़्वातों का सिलसिला	(हास्य कविताएँ)
हास-परिहास	(अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
आत्म-गुंजन	(काव्य-संग्रह)
जीवन-निधि	(कहानी-संग्रह)
आज का पुरुष	(नज़्म व ग़ज़ल संग्रह)
दर्द-जुबाँ	(काव्य-संग्रह)
जीवन के रंग	(नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेन्ट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित)
अनमोल हास्य क्षण	

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.
४५ बी., आसफ अली रोड
नई दिल्ली - ११०००२, भारत
Star Publishers' Distributors

55, Warren Street
LONDON - W1T 5NW, England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित